RNI: UPHIN/2015/63899

मासिक, जनवरी 2019, ₹15/-

व्यवस्था दर्पण

बेबाक, निष्पक्ष, निर्भीक

..तो अमित शाह अध्यक्ष पद की कुर्सी छोड़ देंगें !

18

सभी देशवासियों को
नववर्ष
एवं
गणतंत्र दिवस
की
हार्दिक शुभकामनायें
राष्ट्रीय लोकदल
चौधरी चरण सिंह की सोच को आगे बढ़ाते हुए...
आपका
नरेन्द्र सिंह
(MBA-IIMA)
16 हाथरस लोकसभा क्षेत्र
M: 8077993810

व्यवस्था दर्पण

वर्ष–4, अंक–6, जनवरी 2019, मूल्य– 15 रूपये

RNI: UPHIN/2015/63899

संपादक

जियाउर्रहमान

उपसंपादक	:	आमिर साबरी (लखनऊ)
प्रबंध सम्पादक	:	किरनपाल सिंह
सलाहकार सम्पादक	:	दिनेश गुर्जर, डिंकल अग्रवाल, आर ए चौधरी
सहयोगी	:	आरती कपूर, सूरज बघेल, अरबाज खान
कानूनी सलाहकार	:	चौ. बलवीर सिंह एड. अनीस चौहान एड. प्रतीक चौधरी एड.

ब्यूरो प्रभारी

नई दिल्ली	:	अंकिता सिंह
राजस्थान	:	शिवम अग्रवाल
बिहार	:	नौशाद वारसी
इलाहाबाद/पूर्वी यूपी	:	शशांक मिश्रा
लखनऊ	:	आफक मंसूरी
गौरखपुर	:	राशिद अकेला
मेरठ	:	आकेश पांडेय, मिहिर सक्सैना
बुलन्दशहर	:	शुभम अग्रवाल
मौ. बुद्धनगर(नोएडा)	:	अमित शर्मा
सीतापुर	:	प्रफुल्ल रस्तोगी
बंदायू	:	योगेश यादव एड.
बरेली	:	इमरान रजा.
संभल	:	जाहिद नूर
हाथरस	:	मनोज कुमार वार्ष्णेय
बिजनौर	:	आसिफ रईस
आगरा	:	कुँवर नफीस अहमद

मुख्य कार्यालय

402, तृतीय तल, द ग्रेट शॉपिंग मॉल, विद्या नगर, रामघाट रोड, अलीगढ, उ.प्र.– 202001, 0571–3264777

लखनऊ कार्यालय

प्रथम तल, करीम प्लाजा, टैक्सी स्टैंड, अमीनाबाद लखनऊ– 26018

09454391714, 09719969790, 9410672481

Email: **editorvdarpan@gmail.com**
vyavasthadarpan@gmail.com
website: www.vyavasthadarpan.com
(News portal)

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक जियाउर्रहमान द्वारा वर्ल्ड मीडिया सोल्यूशन, द ग्रेट शॉपिंग मॉल, रामघाट रोड अलीगढ़ से मुद्रित कराकर 402ए तृतीय तल, द ग्रेट शॉपिंग मॉल रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.) से प्रकाशित

समस्त वाद–विवाद का न्याय क्षेत्र अलीगढ़ उप्र होगा। पत्रिका में प्रकाशित लेख–समाचारों में सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं। इसका उत्तरदायित्व लेखक का होगा। सभी पद अवैतनिक हैं।

जानिए कैसा होगा प्रयागराज कुम्भ-2019 -6

कितने नाम बदलेगी नफरत की सियासत -12

अलीगढ की महिला शक्ति ने यदि शुरू किया #MeToo तो बेनकाब होंगे तमाम 'चेहरे' -22

यूपी में भाजपा का सफाया करेगा सपा, बसपा और रालोद का गठबंधन -24

मोदी मैजिक खत्म, 2019 में नये प्रधानमंत्री के लिए तैयार रहे देश -26

क्या राम मंदिर या बाबरी मस्जिद बनने से हिंदुस्तान की दरिद्रता दूर हो जायेगी ? -28

सम्पादकीय

नववर्ष 2019 का आगाज हो चुका है, अनेकता में एकता समाए विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक हमारे देश भारत के लिए यह वर्ष कई मायनों में अहम है। 2019 में देश आगामी पांच वर्षों के लिए अपनी सरकार चुनेगा या यूं कहें कि अपना भविष्य तय कर करने के लिए नई संसद का निर्वाचन करेंगा। 2019 के शुरू होते ही देश के सभी सियासी दल चुनावी मोड में आ गए है। एक तरफ सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार पुनः एक बार देश की सत्ता में वापस लौटने के लिए लालायित है तो वहीं राहुल गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस और कई बड़ी राजनीतिक पार्टियां 2019 में केन्द्र की सत्ता में आने के लिए सपने संजोय हुए है।

2014 में पीएम नरेन्द्र मोदी ने काला धन वापस लाने, युवाओं को रोजगार देने, भ्रष्टाचार खत्म करने और अन्नदाता किसानों की आय दुगने करने जैसे तमाम वायदे किए थे लेकिन पांच वर्ष बीतने को है। दांवे जो भी हो, हकीकत धरातल पर कोसो दूर है। भाजपा आलाकमान से लेकर कार्यकर्ता तक 2019 में वापसी को लेकर बैचेन है तो वहीं भाजपा द्वारा वायदे न पूरे करने और उसके खिलाफ जनता के बढ़ते जनाक्रोश को देखते हुए कांग्रेस और अन्य क्षेत्रीय दलों में खुशी की लहर है। पीएम मोदी से विपक्षी दल इतने आहत और सहमे हुए है कि कई राज्यों में तो धुरविरोधी दलों ने गठबंधन कर भाजपा को हराने की पटकथा लिखना शुरू कर दिया है। हालांकि पीएम मोदी को लेकर भाजपा के कई बड़े नेता विद्रोह किए हुए है तो वहीं भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह को लेकर भी विरोध के स्वर उठने लगे है। 2019 में विपक्षी दलों के गठबंधन से पार पाना भाजपा के लिए आसान नहीं होगा।

दूसरी ओर राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने गत माह ही राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की विजय पताका लहरायी है। राहुल गांधी को लेकर तेजी से लोगों में क्रेज भी बढ़ा है तो वहीं किसानों के कर्जमाफी के मुद्दे ने भी कांग्रेस को नैतिक बल दिया है। भाजपा द्वारा दिखाये गए सपनों के पूरे न होने से देश एक बार फिर कांग्रेस की ओर देख रहा है। लेकिन चुनावी रणभेरी में जनता कांग्रेस को क्या परिणाम देगी यह तो वक्त ही बतायेगा।

कांग्रेस और भाजपा से इतर देश के सबसे बड़े राज्य यूपी में भाजपा और कांग्रेस के खिलाफ बड़ा जनाधार रखने वाले समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और राष्ट्रीय लोकदल का महागठबंधन तय माना जा रहा है। अन्य कई राज्यों में भी कई क्षेत्रीय दल एक होकर भाजपा के खिलाफ ताल ठोक रहे है और कांग्रेस को नई चुनौती देने की तैयारी में है।

2019 का चुनावी रण हिंदुस्तान के लिए इस लिए भी महत्वपूर्ण है कि धर्म और जाति की चल रही हवा किस करवट बैठेगी इसी वर्ष तय हो जायेगा। देश का आमजन सड़क, रोजगार, शिक्षा और विकास को प्राथमिकता देगा या फिर राजनीतिक दलों द्वारा फैलाये जाने वाले धार्मिक भावनाओं के खेल में बहेगा यह भी 2019 में तय हो जायेगा। भाजपा के खिलाफ किसानो, युवाओं, गरीबों और व्यापारियों के बढ़ते आक्रोश और देश के प्रतिदिन बनते नए सियासी घटनाक्रमों से यह तो स्पष्ट हो गया है कि केन्द्र में भाजपा को लौटना मुश्किल हो जाएगा। नववर्ष में देश को नया प्रधानमंत्री मिलेगा या पीएम मोदी एक बार फिर सत्ता संभालेगे यह विचारणीय प्रश्न है लेकिन इतना तय है कि 2019 के चुनावी परिणाम राष्ट्र के लिए दूरगामी सिद्ध होगे।

उम्मीद है कि देश का आमजन नववर्ष 2019 में भारत और भारत की राजनीति को धर्म–जाति, ऊंच–नीच, नफरत और सामाजिक भेदभावों से निकालकर नई दिशा देंगा।

नववर्ष की मंगलकामनाओं के साथ...

आपका

जियाउर्रहमान
editorvdarpan@gmail.com

नेताओं के मकड़जाल में कराहता भारत

श्याम सुन्दर मिश्र–

उत्पादन, निर्माण और बिक्री किसी भी देश के विकास हेतु सर्वोपरि है। तत्पश्चात सुरक्षा और प्रबंधन। और इन सब के मूल में है शिक्षा व संस्कार। पर वर्तमान दौर में राजनीति इस कदर हावी हो चुकी है कि ये सारे मुद्दे काम चलाऊ बन गये हैं और शिक्षा का क्षेत्र राजनीति का अखाड़ा। राजनीतिज्ञों ने मान लिया है कि भोजन की आवश्यकता के चलते किसान खेती करने को मजबूर है और व्यापारी व्यापार करने हेतु। पर राजशाही कभी भी मजबूर नहीं रही। सत्ता के बल पर हुक्म चलाना और ऐयाशी करना ही राजधर्म रहा है। राजाओं ने अपनी मानकिसता के अनुरुप कार्य किये और उत्थान-पतन का दौर चलता रहा।

नरेन्द्र मोदी संस्कारवान है पर सत्ता मोह देवराज जैसा ही है। आज की राजनीति उन्हीं के पदचिन्हों पर तीव्रगति से बढ़ती जा रही है। सत्ता प्राप्ति के लिये आये दिन भिन्न–भिन्न चुनाव हमारी नियति बनते जा रहे हैं। सत्ताधीश आत्म संतुष्टिड्ड के लिये मातहत और अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों का धुँआधार प्रचार करने और सत्ता के रण में विजय श्री हासिल करने को ही उपलब्धि मानने लगे हैं और देश की जनता इसी मुगलते में है कि आखिरकार लो. कतंत्र बरकार है और पाँचवर्ष बाद अत्याचारी को सत्ता से बेदखल कर ही देंगे। आजादी के सत्तर वर्षों में न जाने कितने चुनाव हुवे, कितनों को बदला गया पर हालात दिन–पर दिन बिगड़ते रहे और थक हार कर देश की सवा. र्च्च अदालत को ये कहना पड़ा कि हिंदुस्तान भगवान भरोसे

सीधी सी बात है कि राजनीति ऐसा व्यापार बन चुकी है जिसमें एक लगाओ दो पाओ नहीं बल्कि एक लगाओ करोड़ों पाओ वाला फंडा है। अतः टिकट पाने के लिये साम-दाम-दंड-भेद सभी का प्रयोग किया जा रहा है और न मिलने पर आत्मदाह, फाँसी पर लटक जाना अथवा स्वयं को गोली से उड़ा लेने जैसे वाकयात भी प्रकाश में आने लगे हैं। चुनावों में प्रतिद्वंदी की हत्या करना अथवा कराना तो आम बात हो गयी है।

ही चल रहा है। अर्थात व्यवस्था नगण्य है। फिर क्या जरूरत है नेताओं को पालने की? आम जनता इनका बोझ उठाने के लिये क्यों मजबूर है? योग्य अभ्यार्थी प्रशासन में जायें और उनका मुखिया मानीटरिंग करे इतना ही पर्याप्त है। बात कानून और व्यवस्था की उठती है तो उसके विशेषज्ञ कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में भरे पड़े हैं वे सेना और पुलिस को उचित निर्देश देने की क्षमता रखते हैं। अतरू आम नागरिकों और बुद्घिजीवियों का कर्तव्य बनता है कि वे देश व प्रदेश को नेताओं के चंगुल से मुक्त कराकर रा. जनीतिज्ञों को भी आम नागरिकों की तरह श्रम करके देश के विकास में लगने के लिये मजबूर करें। अन्यथा ये इसी प्रकार फूट, विद्वेष और अराजकता फैलाकर, बयानबाजी की रोटी खाकर हमें लूटते रहेंगे और अपनी ऐयाशियों के चलते

देश को गिरवी रखने में तनिक भी संकोच नहीं करेंगे।

नक्सलियों को पानी–पी–पीकर कोसने वाले ये क्यों नही सोचते कि वे नक्सली क्यों बने? कोई अनायास ही बंदूक उठाकर अपनी जिंदगी दाँव पर नहीं लगाता? घर–परिवार से महरुम होकर अपनी और परिवार की अशांति नहीं चाहता। मूढ़ से मूढ़ व्यक्ति भी नक्सलवाद को सही नहीं मानता। पर जीवे–जीव आहार की तर्ज पर अपना जीवन बचाने के लियू दूसरे का जीवन ले लेना इंसान की मजबूरी ही तो है और उसकी इस मजबूरी का एकमात्र कारण सत्ता और व्यवस्था से जुड़े लोग ही तो हैं। अतरू नक्सलवाद समाप्त करना है तो उन परिस्थितियों को समाप्त करना ही होगा जिसके चलते नक्सलवाद की मानसिकता जन्म लेती है और पनपती है। नक्सलियों को समाप्त करने के पूर्व उन परिस्थितियों को समाप्त करना होगा। जिनके चलते लोग नक्सलवादी बनने के लिये मजबूर होते हैं। नक्सली शहरी और ग्रामीण अथवा जंगली नहीं होते। वे सताये हुवे इंसान हैं जो व्यवस्था का विरोध करने की मानसिकता से इस क्षेत्र में उतरे और प्रभाव जम जाने पर निर्मम व ऐयाश भी हो गये। अपनी सुख सुविधा एवं सुरक्षा की मानसिकता से ही वे सफेदपोशों एवं राजनीतिज्ञों से जुडकर दोहरा गेम खलने लगे जो नक्सलवाद के उद्देश्यों के सर्वथा विपरीत है। इनका सफाया नितॉंत आवश्यक है। किन्तु व्यवस्था की खामियाँ दूर किये बिना इनका अंत असंभव है। तभी तो एक नक्सली के मारे जाने पर सौ नक्सली और पैदा हो रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इन्हें मृत्युदंड न देकर नजरबंदी का जो ऐतिहासिक फैसला किया है वो निसंदेह सराहनीय है और रक्त बीजों के जन्म पर रोक लगाने का अनूठा प्रयास है।

लोकतंत्र में राजनीतिज्ञों को जनसेवक का दर्जा प्राप्त है और मालिकाना हक जनता को पास है। पर वास्तविकता क्या है ये सर्व विदित है। सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों में ही चोर चोर मौसेरे भाई का अटूट संबंध है। पर दिखावे के लिये नूरा कुश्ती भी तो जरूरी है? स्वयं को जनता का सेवक कहते हुवे चुनावक्षेत्र में उतरने वाले वोटों को खरीदने के लिये धन क्यों लुटाते हैं? चरणवंदन अथवा दबंगई का सहारा क्यों लेते हैं? आप अर्जी लगा दो जनता चुन ले तो सेवा में लग जाओ न चुने तो रोजमर्रा की जिंदगी में रहो। टिकट के लिये मारा–मारी, प्रचार में धनवर्षा एवं दबंगई आखिर क्यों? सीधी सी बात है कि राजनीति ऐसा व्यापार बन चुकी है जिसमें एक लगाओ दो पाओ नहीं बल्कि एक लगाओ करोड़ों पाओ वाला फंडा है। अतरू टिकट पाने के लिये साम–दाम–दंड–भेद सभी का प्रयोग किया जा रहा है और न मिलने पर आत्मदाह, फाँसी पर लटक जाना अथवा स्वयं को गोली से उड़ा लेने जैसे वाकयात भी प्रकाश में आने लगे हैं। चुनावों में प्रतिद्वंदी की हत्या करना अथवा कराना तोआमबात हो गयी है। इन वाकयातों से सिद्घ होता है कि राजनीति सेवा का नहीं बल्कि कमाई का क्षेत्र बन चुकी है।

अतरू देश को राजनीतिज्ञों के चंगुल से मुक्त कराकर दूसरी व्यवस्था बनानी ही होगी। एक ऐसी व्यवस्था जिसमें हर आदमी को देश के लिये काम करना जरूरी हो। हरामखोरी की कोई भी गुंजाइश न हो। किन्तु अशक्तों की पूरी देखभाल एवं भरण पोषण की व्यवस्था भी हो। रहन सहन व सम्मान योग्यता के अनुरुप हो किन्तु उनमें जमीन आसमान का अंतर न हो क्योंकि कोई काम हेय नहीं होता। सभी की जरूरतों और भावनाओं का सम्मान होना ही चाहिये। इंसानियत को सर्वोच्च धर्म की मान्यता देते हुवे शाँति पूर्वक ईश्वर आराधना की छूट होनी चाहिये किन्तु हल्लागुल्ला एवं दूसरों को व्यवधान पहुँचाने की व्यवस्था पर पूर्णतरू रोक भी लगानी होगी।

–वरिष्ठ लेखक एवं समाज सेवी

अलीगढ़ लोकसभा 2019 के लिए भाजपा और बसपा में लगी दिग्गजों की लाइन

2019 देष सहित अलीगढ की राजनीति में बहुत कुछ बदलाव करने वाला है। 2014 में अलीगढ लोकसभा पर बसपा को हराकर मोदी लहर में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत हासिल की थी। लेकिन भाजपा के खिलाफ जनाक्रोष और यूपी में होने जा रहे सियासी गठबंधन ने अलीगढ की राजनीति में सियासी उठापठक तेज कर दी है। भाजपा के वर्तमान सांसद सतीष गौतम 2019 में अपनी टिकट बचाये रखने के लिए हाईकमान से लेकर जिला स्तर तक गोटियां बिछाने में लगे हुए है वहीं बहुजन समाज पार्टी से टिकट पाने के लिए दिग्गजों की लाइन लगी हुई है।

यूपी में सपा बसपा और रालोद के गठबंधन की चर्चायें होने से अलीगढ़ सीट बसपा के खाते में जाना तय माना जा रहा है। वहीं कांग्रेस अपने दम पर अलीगढ़ लोकसभा लड़ सकती है। गठबंधन में बसपा से टिकट पाने के लिए कई सियासी सूरमा लाइन में है। अलीगढ़ में जारी चर्चाओं में बसपा से पूर्व मंत्री रामवीर उपाध्याय, पूर्व विधायक गुड्डु पंडित, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष तेजवीर सिंह गुड्डू के नाम शामिल है। वहीं रालोद नेत्री उर्मिला देवी, गंगाराम और पूर्व विधायक चौधरी सत्यपाल सिंह के नाम भी चर्चाओं में है। नववर्ष में पूर्व विधायक प्रमोद गौड़ के बसपा से निष्कासन खत्म होकर बसपा में आने के भी अलग मायने लगाये जा रहे है। प्रमोद गौड भी लो. कसभा सीट के प्रबल दावेदारों में शामिल हो गये है। गठबंधन में कांग्रेस के बाहर रहने से कांग्रेस से पूर्व सांसद चौधरी बिजेन्द्र सिंह, पूर्व विधायक विवेक बंसल, परवेज खान के नाम चर्चाओं में है।

बसपा में शामिल होकर निष्कासित हुए पूर्व विधायक हाजी जीरउल्लाह खां साइलेंट मोड पर है। उन्हें भी बसपा में वापस लेकर लोकसभा का दावेदार माना जा रहा है। शिवपाल यादव की प्रगतिशील समाजवादी पार्टी लोहिया से भी ठाकुर रक्षपाल सिह और राजपाल यादव के नाम भी लोकसभा टिकट के लिए चर्चाओं में है। चर्चाओं में तो यह भी है कि पूर्व सांसद और कांग्रेस के जिलाध्यक्ष चौधरी बिजेन्द्र सिंह भी बसपा से टिकट की लाइन में है। वहीं राजनैतिक सूत्र तो यह भी बताते है कि भाजपा के कई बड़े नेता बसपा से टिकट मांग रहे है और बसपा सुप्रीमों से भी मिलकर आ चुके है। 2019 में अलीगढ़ सीट पर मुकाबला दिलचस्प रहने वाला है।

भाजपा में भी टिकट के दावेदारों की लंबी लाइन है। सांसद सतीश गौतम अपनी टिकट को बचाने में लगे है। 2019 के रण में कूदने के लिए पूर्व मंत्री जयवीर सिंह के पुत्र ठाकुर अभिमन्यु सिंह, राजपैलेस के समधी ठाकुर श्यौराज सिंह, दामाद प्रवीण राज सिंह, भाजपा नेता राजेश भारद्वाज, यतिन दीक्षित, मानव महाजन, राहुल गौतम, शशि सिंह के नाम टिकट की दौड़ में आगे है।भाजपा नेतृत्व द्वारा अलीगढ़ में गोपनीय सर्वे कराने की भी खबरें है। वहीं माना यह भी जा रहा है कि अलीगढ़ लोकसभा पर भाजपा से उम्मीदवार वहीं होगा जिसे राजपैलेस का आर्शीवाद प्राप्त होगा। भाजपा और बसपा हा. ईकमान ने टिकट वितरण को अंतिम रूप देना शुरू कर दिया है। अब देखना यह है कि 2019 में अलीगढ़ का प्रतिनिधित्व कौन करता है?

जानिए कैसा होगा प्रयागराज कुंभ -2019

-शशांक मिश्रा

मेषराशिगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुंभख्यस्तीर्थ नायके।

संगम की रेती पर आयोजित होने वाला कुंभ मेला करोड़ों –करोड़ श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए तैयार हो रहा है।

अर्धकुंभ मेला हर 6 साल बाद होता है और केवल इलाहाबाद और हरिद्वार में ये मेला लगता है। आप भी कुछ महीने बाद लगने वाले इस कुंभ मेले का हिस्सा बन सकते हैं। अर्ध कुंभ मेला 14 जनवरी से 4 मार्च 2019 तक चलेगा है। इस बार के अर्ध कुंभ जो की कुंभ कर दिया गया है वही कुंभ को महाकुंभ कर दिया गया है !कुंभ में काफी चीजें खास तौर पर होंगी जो पहले कभी नहीं हुई हैं।

पूरे शहर की दीवारें पेंट माय सिटी योजना के तहत हो रही रंग बिरंगी :–

कुंभ के दौरान प्रयागराज आने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए शुरू की गई पेंट माय सिटी योजना का दायरा बढ़ा दिया गया है। पहले सिर्फ सरकारी भवनों और पुलों की दीवारों पर ही पेन्टिंग्स बनाने की योजना थी, लेकिन इसे लेकर मिल रही बेहतर प्रतिक्रिया के चलते अब अखाड़ों के साथ ही निजी भवनों और पेड़ों को भी पेंट करने की शुरुआत की गई है।

मेला क्षेत्र को जोड़ने वाली सड़कों विशेषकर एनआरआई और विदेशी श्रद्धालुओं के लिए तय मार्गों को अलग–अलग रंगों से सजाया जा रहा है, जिससे सभी लोग एक सुखद याद लेकर लौटें। एनआरआई और विदेशी पर्यटकों के लिए अरैल मेला क्षेत्र में टेंट सिटी बन रही है। इसलिए टेंट सिटी को जोड़ने वाली सड़कों के किनारे स्थित पेड़ों को अलग–अलग थीम पर रंग दिए जा रहे हैं।

पेंट माय सिटी की मुख्य थीम देवासुर संग्राम है। हालांकि इसके साथ ही कुंभ और इलाहाबाद से जुड़े धार्मिक, सांस्कृतिक और सा. हित्यिक कथानक और लोग भी इसमें शामिल किए गए हैं। कुंभ का दिल कहे जाने वाले साधु–संन्यासी और कल्पवासी भी

पेंटिंग्स का हिस्सा बने हैं। पेंटिंग्स के लिए प्रफेशनल चित्रकारों की मदद ली जा रही है। इस योजना में न केवल पेंटिग बल्कि म्यूरल को भी डिजाइन का आधार बनाया गया है।

टेंट सिटी बसाई जा रही है :–

संगम तट पर अरैल में इस टेंट सिटी के जरिए पर्यटन विभाग देश–दुनिया में कुंभ की ब्रांडिंग करेगा। संगम तट पर स्नान, ध्यान के साथ योग यज्ञ और भारतीय नृत्य–संगीत से इस टेंट सिटी में विश्व समुदाय के लोग परिचित हो सकेंगे। यहां बुक फेयर भी लगेगा और कला ग्राम भी सजेगा।

कला ग्राम में देश के हर राज्य, हर कोने के हस्त शिल्प से लेकर जरदोजी, बुनकरी, काष्ठ कलाकारी, जूट आर्ट का गुलदस्ता पेश किया जाएगा। चार कंपनियां मिलकर 3000 स्विस कॉटेज संगम की रेती पर लगाएंगी। इन कंपनियों में गुजरात की गांधी इंटरप्राइजेज,

लाभ डेकोरेटर के अलावा दिल्ली की हितकारी प्रोडक्शन कंपनी और लखनऊ की आगमन इंटर प्राइजेज शामिल हैं।

इसके अलावा लल्लू जी ब्रदर्स और लल्लूजी एंड संस को यमुना ब्रिज के नीचे डारमेट्री लगाने का जिम्मा दिया गया है। कुल 1200 डारमेट्री का निर्माण जारी है।

हजारो एनआरआई आएंगे कुंभ में :–

दरअसल 21 से 23 जनवरी के बीच वाराणसी में प्रवासी भारतीय दिवस के मौके पर दुनियाभर से हजारों एनआरआई जुटने वाले हैं। ऐसे में सरकार करीब 5000 एनआरआई को कुंभ के बहाने प्रयागराज ले आएगी। इनको कुंभ भ्रमण के अलावा प्रयागराज के विख्यात स्थलों तक भी ले जाएंगे। प्रवासी भारतीयों को ठहराने के लिए संगम के करीब टेंट सिटी भी बनाई जा रही है। सभी सुविधाओं से लैस इस टेंट सिटी और प्रवासी मेहमानों की सुरक्षा व्यवस्था कमांडों संभालेंगे। मेला प्रशासन ने इसके लिए सरकार से एनएसजी और एटीएस के कमांडो मांगे हैं। इसके अलावा पैरा मिलिट्री फोर्स और प्रदेश पुलिस के विशेष प्रशिक्षित जवान तैनात होंगे।

पहली बार कुंभ में किन्नर अखाड़ा

आगामी 2019 में लगने वाले कुंभ मेले के लिए अखाड़ा परिषद में संगम की रेती पर भूमि पूजन किया है। बता दें कि संगम के तट पर पहली बार किन्नर अखाड़ा स्थापित होने जा रहा है। जबकि अखाड़ा परिषद लगातार इनका विरोध करता रहा है। वही किन्नर अखाड़े ने भूमि पूजन के बाद भी साफ कर दिया कि वह किसी भी तरह के दबाव में नहीं आने वाला है। और वह आगामी कुंभ में अन्य अखाड़ो की तरह संगम के तट पर एक माह तक पूजा.अर्चना और अनुष्ठान करने की तैयारी में है। किन्नर अखाडे के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी महराज के नेतृत्व में अखाडे के महामण्डलेश्वर, पीठाधीश्वर,महंत सहित अन्य प्रमुख संत–महात्मा ने संगम के तट पर सेक्टर– 12 में शिविर लगाने के लिये विधि विधान से भूमि पूजन किया।

सोशल मीडिया पर रहेगी हर अपडेट

कुंभ ऐप में कुंभ क्षेत्र की सम्बंधी सभी जानकारी होगी। मेला क्षेत्र में खाने और रुकने की पूरी डिटेल हर दिन अपडेट किया जयेगा। साथ ही यतायात की सुविधा भी श्राद्धलुओं को मिलेगी इसके साथ ही मेला क्षेत्र में कहा इवेंट हो रहे है। किस घाट पर स्नान स्नान किये जाएंगे इसकी पूरी जानकारी ऐप पर अपडेट होगी। ज्ञनउइी.हवअ.पद के नाम से बनी बेवसाइट पर सभी जानकारी अपडेट होगी। साथ ही ट्विटर, फेसबुक,अलावा सभी सोशल साईट में कुंभ की जानकारी श्रद्धालु ले सकेंगे।

जूम कैमरे से होगा भीड़ का आकलनः–

वहीं कुंभ मेले में भीड़ के प्रबंधन को देखने के लिए 13 जूम् कैमरे पुलिस को मुहैया कराए जा चुके हैं सभी सेक्टरों में जूम से रिकॉर्डिंग करके भीड़ का आकलन किया जाएगा सभी यातायात प्रबंधन के इस्तेमाल के लिए ट्रेन का योग होगामेले के प्रबंधन से जुड़े वरिष्ठ अधिकारी की मानें तो मेले में सभी विभागों को जो बजट आवंटित किया गया है उसमें तकनीकी पर विशेष ध्यान देने को कहा गया है सभी विभाग तकनीक पर लगभग 400 करोड़ रुपए खर्च करते हैं।

अंतराष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था होगी :–

कुम्भ मेला 2019 में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं की सुरक्षा 45 हजार से अधिक पुलिसवालों के हाथों में होगी, जो रेलवे स्टेशनों से लेकर मेला क्षेत्र व शहर में तैनात रहेंगे। बाहरी जिलों से आ रहे पुलिसकर्मियों का प्रशिक्षण परेड स्थित पुलिस लाइन में शुरू हो चुका है जहां रोज इन पुलिसकर्मियों को सेवाभाव से ड्यूटी करने की ट्रेनिंग दी जा रही है।

कुम्भ में तैनात होने वाले सुरक्षा बलों में जहां सिविल पुलिस के लगभग 16 हजार लोग तैनात होंगे वहीं बड़ी संख्या में पीएसी और अर्द्धसैनिक बल की तैनाती की जाएगी। इनके साथ ही एटीएस और एनएसजी के कमांडो भी मेले की सुरक्षा में मुस्तैद रहेंगे। जिसके लिए एनएसजी की टीम पूर्व में यहां रिहर्सल भी कर चुकी है।

मेला क्षेत्र में 437 सीसीटीवी कैमरे लगाये जाएंगे। ट्रिपल प्लस से जहां एक ओर पूरे मेला क्षेत्र को देखा जा सकेगा वहीं बनाए गए वॉच टॉवरों पर भी लगे कैमरे कंट्रोल रूम से जुड़े होंगे। ताकि स्नानघाटों की पूरी गतिविधियों पर नजर रखी जा जा सके।

भारत-पाक के बीच नफरत, अविश्वास रूपी बर्लिन की दीवार ढहनी ही चाहिए

-राकेश सैन

सिख समुदाय द्वारा पिछले 70 सालों से करतारपुर गलियारे संबंधी की जा रही मांग स्वीकार करने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भी गुरु नानाक देव जी के भक्त लाला दुनीचंद जी की श्रेणी में आ गए हैं जिन्होंने गुरु जी को 100 एकड़ जमीन दान देकर अपने को कृतज्ञ किया था। लाला दुनीचंद के बारे में बताया जाता है कि वे दिल्ली में शासन कर रही लोधी राजवंश सत्ता के गवर्नर थे और गुरु नानक देव जी के सच्चे श्रद्धालु भी। इतिहासकार बताते हैं कि 1522 में वे गुरु जी के संपर्क में आए। सिख धर्म में ननकाना साहिब, अमृतसर, सुल्तानपुर लोधी सहित असंख्य आस्था स्थल हैं जिनमें करतारपुर साहिब का अपना ही महत्त्व है। गुरु नानक देव जी ने रावी नदी के किनारे एक नगर बसाया और यहां खेती कर उन्होंने नाम जपो, किरत करो और वंड छको (नाम जपें, परिश्रम करें और बांट कर खाएं) का सिद्धांत दिया था। इतिहास के अनुसार गुरु जी की तरफ से भाई लहणा जी को गुरु गद्दी भी इसी स्थान पर सौंपी गई थी जिन्हें दूसरे गुरु अंगद देव जी के नाम से जाना जाता है और आखिर में गुरुनानक देव जी यहीं पर ज्योति ज्योत समाए। बताया जाता है कि लंगर और पंगत की परंपरा भी यहीं से शुरू हुई।

गुप्चर एजेंसियों से मिल रही सूचनाएं बताती हैं कि पाकिस्तान भारतीय पंजाब में फिर से खालिस्तानी आतंकवाद को हवा दे रहा है। पाकिस्तान की यह हरकत दोनों देशों के बीच हुए शिमला समझौते व जेनेवा कान्फ्रेंस के नियमों का उल्लंघन है जिसमें साफ–साफ कहा गया है कि कोई भी देश अपने यहां पड़ौसी देश के खिलाफ सक्रिय अपराधी तत्वों को सहयोग नहीं देगा।

सदियों तक यह स्थान श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र बना रहा परंतु देश के विभाजन के बाद यह पाकिस्तान में चला गया। करतारपुर साहिब, पाकिस्तान के नारोवाल जिले में है। यह जगह लाहौर से 120 किलोमीटर और भारतीय सीमा से महज 4 किलोमीटर दूर है जिस जगह पर गुरुद्वारा बना हुआ है। अपने आस्था स्थलों के बिछड़ने का सिख समाज को अत्यंत दुख हुआ और इसकी सेवा सम्भाव को अपने हाथों में लेने के लिए विभाजन के तुरंत बाद ही लालायित हो उठे। उन्होंने अपने दैनिक अदरास में अपनी इस इच्छा को शामिल किया कि– श्री ननकाना साहिब ते होर गुरुद्वारेयां, गुरुधामां दे, जिनां तों पंथ नूं विछोड़या गया है, खुले दर्शन दीदार ते सेवा संभाल दा दान खालसा जी नूं बख्शो...। (अर्थात् ननकाना साहिब और बाकी गुरुद्वारे या गुरुधाम जो बंटवारे के चलते पाकिस्तान में रह गए उनके खुले दर्शन सिख कर सकें इसकी हम मांग करते हैं।)

सिख संगत द्वारा की जाने वाली अरदास को उस समय बोर पड़ना शुरू हुआ जब 1974 में भारतीय सेना ने इस मामले को पाकिस्तान के समक्ष उठाया। 1999 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी बस लेकर लाहौर पहुंचे तो इस मसले को फिर उठाया गया। अकाली दल के नेता कुलदीप सिंह वडाला की तरफ से 2001 में– करतारपुर रावी दर्शन अभिलाखी संस्था

की शुरुआत की गई थी और 13 अप्रैल 2001 के दिन बैसाखी के दिन अरदास की शुरुआत हुई। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के समक्ष पहले 2004 फिर 2009 में इस मुद्दे को उठाया गया और उन्होंने पाकिस्तान के साथ इसको लेकर बातचीत करने का भरोसा दिलवाया। 2010 और 2012 में अकाली दल बादल और भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने पंजाब विधानसभा में दो बार प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार को भेजे। जुलाई 2012 में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंह मक्कड़ ने गलियारा खोलने की वकालत करते हुए कहा था कि पाकिस्तान ने 1999 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की पाकिस्तान यात्री के वक्त इसे खोलने की पेशकश की थी लेकिन बात आगे नहीं बढ़ी। स्थायी गलियारे की मांग करने वालों की उम्मीद उस समय टूट गई जब 2 जुलाई 2017 को शशि थरूर की अध्यक्षता वाले विदेश मामलों की सात सदस्यीय संसदीय समिति के सदस्यों ने इस कॉरिडोर की मांग को रद्द कर दिया, जिसमें यह कहा गया था कि मौजूदा राजनीतिक माहौल इस कॉरिडोर को बनाने के अनुकूल नहीं है।

इतने लंबे संघर्ष के दौरान सिख समुदाय ने अपनी मांग नहीं छोड़ी। करतारपुर साहिब के प्रति श्रद्धा को देखते हुए सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने भारत–पाक सीमा पर एक जगह बना दी जहां पर दूरबीन से लोग दूर से ही इसके दर्शन करने लगे। इस बीच गाहे–बगाहे करतारपुर गलियारे की मांग उठती रही परंतु कुछ होता नहीं दिखा। वर्तमान में दुनिया गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाशोत्सव वर्ष को समर्पित समारोह मना रही है तो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने करतारपुर गलियारे की मांग को मानते हुए समारोह के हर्षोल्लास को और बढ़ा दिया है। हर्ष की बात है कि पाकिस्तान ने भी इस योजना को स्वीकृति दे दी है। ऐसा होने पर सिख तीर्थयात्री बिना वीजा करतारपुर आ सकेंगे। सरकार यहां अपने नागरिकों को हर तरह की अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं भी उपलब्ध करवाने जा रही है।

दिल्ली में आयोजित प्रकाशोत्सव पर्व पर अपने संबोधन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि करतारपुर गलियारा दोनों देशों की जनता को एक दूसरे की करीब लाएगा। उन्होंने कहा कि जब बर्लिन की दीवार ढह सकती है तो हमारे बीच की दूरियां भी खत्म हो सकती हैं। यह प्रधानमंत्री की सद्इच्छा हो सकती है परंतु सकारात्मक सोच दिखाने के तुरंत बाद पाकिस्तान से दूसरी खबर भी आई है कि उसने अपने यहां खालिस्तानी आतंकी संगठनों को दोबारा से गठित करना शुरू कर दिया है। अभी गुरुपर्व पर ननक. ाना साहिब स्थित गुरुद्वारे में खालिस्तान को लेकर भारत के विरुद्ध खुल कर आतंकवाद समर्थक पोस्टर लगाए गए। भारतीय श्रद्धालुओं को देश के खिलाफ भड़काया गया और भारतीय दूतावास के अधिकारियों को उन्हें मिलने तक नहीं दिया गया। केवल इतना ही नहीं अभी हाल ही में अमृतसर के राजासांसी के करीब निरंकारी आश्रम में हुए आतंकी हमले के पीछे भी पाकिस्तान का षड्यंत्र बताया जा रहा है जिसमें 3 निर्दोष भारतीयों की मौत हो गई और 19 लोग घायल हो गए। गुप्चर एजेंसियों से मिल रही सूचनाएं बताती हैं कि पाकिस्तान भारतीय पंजाब में फिर से खालिस्तानी आतंकवाद को हवा दे रहा है। पाकिस्तान की यह हरकत दोनों देशों के बीच हुए शिमला समझौते व जेनेवा कान्फ्रेंस के नियमों का उल्लंघन है जिसमें साफ–साफ कहा गया है कि कोई भी देश अपने यहां पड़ौसी देश के खिलाफ सक्रिय अपराधी तत्वों को सहयोग नहीं देगा। दोनों देशों की जनता के दिलों के बीच गलियारा बनाने के लिए भी पाकिस्तान को करतारपुर गलियारे की तरह सहयोगात्मक रवैया अपनाना होगा और भारत को अभी भावनाओं में बहने की बजाय सतर्क हो कर चलना होगा। दोनों देशों का प्रयास हो कि उनके बीच बनी नफरत, अविश्वास रूपी बर्लिन की दीवार ढहनी ही चाहिए।

–आलेख साभार

प्रेम, भय और एक स्त्री का रहस्यलोक !

– सिद्धेश्वर सिंह

जिस जगह अपना हाल मुकाम है वहाँ रहते हुए अगर के किसी दिन सिनेमाघर में बैठकर सिनेमा देखने का मन करे तो एक तरफ से कम से कम नब्बे किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ सकती है.यह यात्रा बस से , ट्रेन से या फिर किराए के या निजी वाहन से की जा सकेगी.यह अलग बात है कि आज से दो दशक पहले तक कस्बे में कुल तीन जीवित सिनेमाघर हुआ करते थे. वे अपनी देह को लगभग ढोते हुए अब भी विद्यमान हैं लेकिन वे तीनो अब बंद टाकीज हैं.बंद टाकीज बस्तर निवासी अपने कविमित्र और सूत्र सम्मान के सूत्रधार विजय सिंह का कविता संग्रह है.जब भी किसी उजाड़,परित्यक्त, अबैनडंड, बंद हो चुके सिनेमाघर को देखता हूँ तो एक बार को सहज ही बंद टाकीज कविता की याद आ जाती है :

मेरे लिए हमेशा यह कौतूहल का विषय रहा है कि टाकीज की अंदर की खाली कुर्सियों में
कौन बैठता होगा ?
वहाँ चूहे तो जरूर उछल कूद करतें होंगे
मकड़ियाँ जाले बुन ठाठ करती होंगी
दीवारों से चिपकी छिपकलियाँ
क्या जानती हैं बाहर की दुनियाँ के बारे में
क्या सोचती हैं बाहर की दुनिया के बारे में
इतने सालों से रूके पंखे क्या एक जगह खड़े –खड़े ऊब नहीं गए होगें ?
क्या उनका मन पृथ्वी की तरह घूमने का नहीं करता होगा ?

अभी कुछ दिन पहले ऐसा संयोग बना कि अपने कस्बे से सैकड़ो किलोमीटर दूर एक सचमुच के सिनेमाघर में फिल्म देखने का अवसर उपलब्ध हो गया. फिल्म का शीर्षक था – स्त्री. आजकल की भाषानई वाली हिंदी का चलन है कि अब फिल्म के ट्रेलर को टीजर कहा जाता है– मतलब कि बानगी जैसा कुछ. बेटे अंचल ने नेट के जरिए इस इसका टीजर दिखाया लेकिन कुछ खास उत्सुकता नहीं हुई लेकिन उस मल्टीप्लेक्स में उस दिन जितनी भी मूवीज चल रही थीं उनमें स्त्री ही सबसे ठीक–सी लगी. यहस्त्री शीर्षक बहुत आकर्षक लगा. अक्सर ऐसा

(भी) होता है कि कोई शीर्षक, कोई संज्ञा, कोई नाम भी अपनी ओर खींच ले जाता है.

बहुत साल पहले मैंने स्त्री शीर्षक से एक फिल्म अपने गांव के सबसे पास वाले कस्बे दिलदार नगर (जिला – गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) के कमसार टॉकीज में देखी थी. उस स्त्री की एक धुंधली–सी स्मृति–छवि है कि वह कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम पर आधारित वी. शांताराम की फिल्म थी. एक बार को ऐसा अनुमान करने का मन हुआ कि हो सकता है कि यह वाली स्त्री उसी पुरानी वाली स्त्री का रीमेक हो लेकिन वह टीजर इस संभावना के विपरीत संकेत कर रहा था. नई स्त्री के दृश्य, भाव,भंगिमा और भाषा में एक अनगढ़ भदेसपन प्रकट हो रहा था जो कि कालिदास और वी. शांताराम के से नैकट्य के निषेध का स्पष्ट द्योतक था.

स्त्री शीर्षक से इधर हाल के वर्षों में लिखी गई ढेर सारी कविताएं भी मन में घुमड़ रही थीं. बहुत सी किताबों के शीर्षक भी याद आ रहे थे जैसे कि **पवन करण** की स्त्री मेरे भीतर और स्त्री शतक, **रेखा चमोली** की पेड़ बनी स्त्री आदि लेकिन जब सुना कि स्त्री एक हॉरर कॉमेडी फिल्म है जिसमे राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर की जोड़ी ने अभिनय किया है तो मन को समझाया कि एक आम मुम्बइया हिंदी फिल्म को फिल्म समझ कर ही देखा जाना चाहिए. इसके निमित्त कविता और साहित्य के अवान्तर प्रसंगों की वीथिका में डोलना–भटकना ठीक बात नहीं लेकिन कविता से दैनंदिन का ऐसा नाता जैसा कुछ बन गया है कि वह अपनी उपस्थिति के लिए राह खोज ही लेती है. हॉरर शब्द से डर शब्द प्रकट हुआ और डर तथा स्त्री शब्द के विलयन से कात्यायनी की कविता इस स्त्री से डरो की याद हो आई :

यह स्त्री सब कुछ जानती है
पिंजरे के बारे में
जाल के बारे में
यंत्रणागृहों के बारे में.
उससे पूछो पिंजरे के बारे में पूछो
वह बताती है नीले अनन्त विस्तार में
उड़ने के रोमांच के बारे में.
जाल के बारे में पूछने पर

गहरे समुद्र में खो जाने के
सपने के बारे में बातें करने लगती है.
यंत्रणागृहों की बात छिड़ते ही गाने लगती है
प्यार के बारे में एक गीत. रहस्यमय हैं
इस स्त्री की उलटबासियाँ इन्हें समझो,
इस स्त्री से डरो.

हमें फिल्म देखनी थी य हम फिल्म देखने गए. हमारे लिए यह एक ऐसी फिल्म थी जिसके कथानक के बारे में कोई खास जानक. ारी नहीं थी. अखबारों में इसके बारे में कुछ खास पढ़ा भी न था. यह न तो बॉयोपिक थी और न ही ऐतिहासिक छौंक वाली कोई कॉस्ट्यूम ड्रामा. वैसे यह पता चला था कि यह उस तरह की भूतिया फिल्म भी नहीं है जैसी कि किसी जमाने में रामसे ब्रदर्स वगैरह बनाया करते थे और न ही महल जैसी क्लासिक ही है.

खैर, स्त्री शुरू हुई. रात के नीम अंधेरे में डूबे किसी पुरावशेषी कस्बे की सर्पिल टाइलों वाली गलियों में घूमता कैमरा हर मकान पर लाल रंग से लिखे एक वाक्य को फोकस कर रहा है – ओ स्त्री कल आना. कहानी बस इतनी सी लग रही है कि प्रेम में डूबी हुई एक स्त्री अपने बिछुड़े हुए प्रेमी को पाने के लिए भटक रही है और इस भटकन में वह कस्बे के हर पुरुष में अपने प्रेमी के होने को खोज रही है– देह और विदेह दोनों रूपों में. वह स्त्री एक साथ शरीर भी है और आत्मा भी. इस जरा–सी कहानी को कहने के लिए इसमें कुछ घटनाएँ हैं, कुछ पात्र हैं और इतिहास की टेक लगाकर ऊंघता हुआ एक कस्बा है.

इस फिल्म को देखते हुए मुझे यह अनुभव हो रहा था कि में एक ऐसे कस्बे में पाँव पैदल विचरण कर रहा हूँ जो कि इतिहास के बोसीदा पन्नों से निकल कर चमकदार और ग्लॉसी बनने को विकल नहीं है. इस तेज रफ्तार दुनिया में वह अपनी मंथर चाल और अपने साधारण होने पर कुंठित नहीं है.वह अपने होने में संतुष्ट है और उसके पास जो भी, जैसा भी हुनर है उसकी कद्र करने वाले विरल भले ही हो गए हों विलुप्त नहीं हुए हैं. इस कस्बे में दर्जी की दुकान पर अब भी भीड़ होती है. संकट में पड़े हुए दोस्त को न छोड़ कर जाने में अब भी सचमुच की हिचक और शर्म बाकी है. पूरा कस्बा एक नवयुवक के मातृपक्ष के रहस्य को गोपन बनाए रखने पर आश्चर्यजनक रूप से एकमत है और कुल मिलाकर इस कस्बे में एक ऐसी स्त्री का भय है जिसको प्रेम के सिवाय और किसी चीज की दरकार नहीं. इस कस्बे का नाम है चन्देरी.

अगर मानचित्र में इसकी निशानदेही आप खोजना चाहें तो मध्य प्रदेश में कहीं एक बिंदु जैसा कुछ शायद दिखाई दे जाय. हिंदी के सुपरिचित–चर्चित कवि कुमार अम्बुज की एक कविता का शीर्षक है – चन्देरी. इस कविता में वह ब्रांड बन चुकी चंदेरी की साड़ियों की बात करते – करते करघे, कारीगर और महाजन तक जब पहुंचते हैं तब उन्हें कुछ और दिखने लगता है या कि यों कहें कि कविदृष्टि उस डर पर ठहर जाती है जो कि तमाम

कलावत्ता के बावजूद चन्देरी में व्याप्त है :

मेरे शहर और चंदेरी के बीच
बिछी हुई है साड़ियों की कारीगरी
इस तरफ से साड़ियों का छोर खींचो तो
दूसरी तरफ हिलती हैं चन्देरी की गलियाँ
मैं कई रातों से परेशान हूँ
चन्देरी के सपने में दिखाई देते हैं मुझे
धागों पर लटके हुए कारीगरों के सिर
चंदेरी की साड़ियों की दूर दूर तक माँग है
मुझे दूर जाकर पता चलता है

स्त्री देखकर अपन हाल से बाहर निकल आए और सोचते रहे कि कि अपने साथ क्या कोई कथा, कोई पात्र, कोई दृश्य साथ जा रहा है? क्या कुछ है जो अरे यायावर रहेगा याद ! की तरह याद रहेगा? यह ठीक है कि अपने अभिनय के लिए राजकुमार राव, पंकज त्रिपाठी, अपारशक्ति खुराना और अभिषेक बनर्जी कुछ समय तक याद रहेंगे लेकिन श्रद्धा कपूर प्रभाव नहीं छोड़ सकीं.

निर्देशक अमर कौशिक का काम ठीक ठाक है. पटकथा और संवाद भी ठीक बन पड़े है. कुल मिलाकर इस फिल्म को एक बार इसलिए देखा जा सकता है कि यह भय और हास्य का एक ऐसा विलयन प्रस्तुत करती है जो कि हिंदी की मुख्यधारा के सिनेमा के लिए नया तो है ही. जो नया है उस पर बात जरूर की जानी चाहिए और बात जब स्त्री, खासतौर पर प्रेम में डूबी हुई स्त्री को केंद्र में रखकर की जा रही हो तब तो अवश्य ही जैसा कि मनीषा पांडेय की कविता प्यार में डूबी लड़कियाँ आगाह करती है कि

प्यार में डूबी हुई लड़कियों से
सब डरते हैं
डरता है समाज
माँ डरती है,
पिता को नींद नहीं आती रात–भर,
भाई क्रोध से फुँफकारते हैं,
पड़ोसी दाँतों तले उँगली दबाते
रहस्यी से पर्दा उठाते हैं...!

काश यह फिल्म जिसका शीर्षक स्त्री है अपने रहस्य को ठीक से बरत पाती !

कितने नाम बदलेगी नफरत की सियासत ?

fuey jkuh&

mÙkj çn'k dh ;kxh vkfnR;ukFk ljdkj }kjk vkf[kjdkj xr 16 vä;cj 2018 dk bykgkckn d uke l çfl) mÙkj çn'k d ,d çe[k fty dk uke ç;kxjkt j[k fn;k x;kA gkykfd bl {k= dk uke çkphu le; e ç;kx gh crk;k tkrk gA fgn /ke l tMh ekU; rkvk d vu lkj lf"V dh jpuk dju oky cã k u viuk lf"V jpuk dk dk; ijk gku d i'pkr blh LFkku ij çFke ;K fd;k FkkA bUgh nk 'kCnk vFkkr çFke d ç o ;K dk ;kx cukdj bu nkuk 'kCnk d ;kx l ç;kx uke j[kk x;k FkkA ckn e exy ckn'kkg vdcj u bl {k= d çk—frd lkn; l çHkkfor gkdj 1583 bloh e ;gk ,d uxj clk;k vkj ifo= LFkyh lxe d fdukj gh viu fo'kky fdy dk fuek.k djk;kA vdcj u gh b'oj dh efgek l lkn;h—r gku oky bl 'kgj dk uke vYykgokl ;kuh vYykg d okl dk LFkku j[k fn;k tk vkx pydj bykokl idkjk tku yxk vkj vxtk u bl bykgkckn d uke l idkjuk 'k# dj fn;kA gekj n'k d ljd-kjh xtfV;l e vf/kdk'kr : ogh uke vc rd çpfyr g tkfd vxtk }kjk j[k vFkok Loh—r fd, x, gA ijr n'k e vud jktufrd ny [kklrkj ij {k=]/ke o tkfr tlh jktuhfr dju oky dN ykx ftUg tuljkdkjk dh jktuhfr l t;knk fny-pLih ykdyHkkou jktuhfr dju e jgrh g o ykx vDlj çpfyr ukek dk cnydj nlj {k=h; Hkk"kkb uke vFkok fdlh /ke o tkfr fo'k"k l tMs egki#"kk d uke ij j[ku dh txr e yx jgr gA

bl çdkj d p;ukRed Qlyk dk dkj.k D;k g\

ble dkb 'kd ugh fd viuh çkphu lL—fr]lH;rk rFkk ekU;rkvk dk ijk vknj fd;k tkuk pkfg,A ijr ;fn uke ifjorlu dk dkj.k doy /ke vFkok fdlh Hkk"kk fo'k"k d fojk/k ij vk/kkfjr gk rk ;g drb xj eukflc gA mnkgj.k d rkj ij ccb ;k ckEc dk ecb d uke l ifjofrlr djuk rk blfy, le> e vkrk g fd ecb ejkBh 'kCn gA ecb d ohVh vFkkr foDVkfj;k Vfeuy LV'ku dk N=fir f'kokth d uke l ifjofrlr djuk Hkh dkQh gn rd eukflc yxrk g D;kfd vxtk d uke dk gVkdj Hkkjrh; o ejkBh 'kkld dk uke j[kk x;kA ijr ftl çdkj mÙkj çn'k e ek;korh u db ftyk o dLck d uke cnydj nfyr lekt d db egki#"kk d uke ij j[kA ;g dne fuf'pr :i l nfyr lekt dk viuh vkj vkdf"kr dju dk gh [ky FkkA buer l db 'kgjk d uke tk ek;korh }kjk cny x, Fk mUg lektoknh ikVh dh ljdkj vku d ckn iu: viu io d uke l gh tkuk tku yxkA cxykj dk cxy: vkj eækl dk pUub o ikMpjh dk i ìpjh gkuk vkfn lcdN {k=h; Hkk"kk l tMs fo"k; gA

ijr Hkkjrh; turk ikVh d 'kkludky e ftl çdkj LFkkuk d uke cnyu dk flyflyk 'k# gvk g ml n[kdj lkQ tkfgj gkrk g fd ikVh d urkvk dk mn o Qkjlh d 'kCnk l uQjr g ;k fQj ;g ykx /khj&/khj exydkyhu Lefr;k dk lekIr dju dk ç;kl dj jg gA ;gh fopkj/kkjk dHkh fo'o d lkr vtck e l ,d le> tku oky rktegy d ihN iMh fn[kkb nrh gA ftl ,d fo'ofo[;kr Hkou u ij vkxjk fty o vk-likl d dkQh cMs {k= dk jktxkj fn;k gk og rktegy bu dêjifFk;k dk doy blfy, lgu ugh gkrk D;kfd bldk

fuek.k exy ckn'kkg 'kkgtgku djok;k FkkA fdru vk'p; dh ckr g fd tk rktegy fo'o d çe[k i;Vd LFkyk d ekufp= e lokifj le>k tkrk gk mlh rktegy dk mÙkj çn'k d i;Vu ekufp= dh lph l çn'k dh ;kxh ljdkj u ckgj dj fn;kA blh fopkj/kkjk d ykx rktegy dk le;≤ ij rtk-egy dgdj Hkh idkjr jgr gA blh ekufldrk d ykxk u db ckj rktegy ifjlj e rkM&QkM dju o v'kkfr Qyku dh Hkh dkf'k'k dh gA ;kxh vkfnR;kukFk viu 'kgj xkj[kij e Hkh çfl) mn ckt kj dk uke cnyok dj fgnh ckt kj dj pd gA fiNy gh fnuk exyljk; d uke l çfl) n'k d ,d çe[k jyo LV'ku dk uke cny dj nhu n;ky mik/;k; uxj j[k fn;k x;kA

vkf[kj bl çdkj d p;ukRed Qlyk dk dkj.k D;k g\ D;k mn 'kCn ;k exydkyhu le; e j[k x, ukek l uQjr dj 'kklu djuk gh Hkktikb urkvk dk edln g\ uke ifjru dh bl çfØ;k e l dMk djkM #i; [kp gkr gA ,l e 'kgjk d uke cnyuk t;knk t:jh g ;k n'k dh turk d fy, jk-txkj]Hk[kejh l futkr fnykuk rFkk fdlkuk }kjk dh tku okyh vkRegR;k, jkduk t;knk t:jh g\ bykgkckn fo'ofo|ky;]bykgkckn f'k{kk ckM]bykgkckn gkbdkV rFkk bykgkckn cd tl cM çfr"Bkuk o lLFkkuk d uke ifjru dju e fdruh cMh ij'kkuh mBkuh iMxh dHkh jkturkvk }kjk ;g lkpu dh Hkh dkf'k'k dh xb g\ bykgkckn e gh t,tl VkÅu],yux t]LVph jkM]Dykbo jkM]pkFke ykbu tl db {k= g D;k dHkh bud uke cnyu dh Hkh dkf'k'k dh tk,xh\ ;fn çkphu ukek dh okilh e gh n'k dk LokfHkeku cyn gkxk rk fnYyh dk bæçLFk dk uke dc fn;k tk,xk\ gfLrukij d uke dh okilh dc gkxh\ y[kuÅ dk y[kuij ;k y{e.kij dc cuk;k tk,xk\ n'k e vkt Hkh gtkjk ,lh txg g ftud uke glux t] vyhx t] vyhij] ejknkckn] vkjxkckn] Qrgij] vktex<] eLrQkckn] bLekbykckn] [kkuij] l¸;n] vgenkckn] ljk,] gluij] futkeíhu] futkekckn] gnjkckn] fldnjkckn]vd-cjij]'kkgtgk ij]rxydkckn vkfn u tku D;k&D;k gA vkj D;k bu lHkh d uke cny fn, tk,x vkj bud uke cnyu l n'k e [k'kgkyh Nk tk,xh\

Hkk"kk l uQjr d lknkxjk dk ;g Hkh lkpuk pkfg, fd o Lo; lcg l 'kke rd gtkjk ,l 'kCn ç;kx djr g ftudk lc/k mn o Qkjlh l g vkj ;g 'kCn çR;d Hkkjroklh d Hkhrj ,d Hkkjrh; Hkk"kk d :i e lekfgr gk pd g mÜg vke Hkkjrokfl;k d efLr"d iVy l gVk nuk bruk vklku ugh gA felky d rkj ij vnkyr]i'kkc]ik;tkek] blkQ] uD'kk] eYd] 'kgj] itkcodhy] gfkde] gDe] j¶rkj]cktkj]fl;klr]ftnkckn] enkckn] etgc]tkr]fdrkc] dye]vkneh]jkg]ru&cnu]#eky]jk-'kukb] xy] xy'ku] [k'c]cnc]l[r]ue t l yk[kk 'kCn ,l g tk çR;d Hkkjrh; viuh fnup;k e viu nfud thou e ldMk ckj bLreky djrk gA D;k p;fur y{; j[kdj jk-tuhfr dju oky fl;klrnk ,l 'kCnk dk Hkkjrh; ykxk d efLr"d l ckgj fudky ldx\ ;fn bykgkckn dk ç;kx jkt dk uke bl mí'; l fn;k x;k g fd ;g uke ge viuh çkphu lL—fr o xkjo dh ;kn fnyk ldxk rk fuf'pr :i l ij n'k e lHkh LFkkuk d uke ijkf.kd ukek d vu|kj rRdky cny fn, tku pkfg,A vkj bldh 'k#vkr bykgkckn ;k exyljk; l ugh cfYd fnYyh l dh tkuh pkfg,A

uke ifjru dh jktuhfr dju oky lHkh jktufrd nyk dk ;g Hkh lko tfud :i l crkuk pkfg, fd uke ifjru dh bl çfØ;k e dy [kp fdruk vk;k vkj D;k jkT; dh çkFkfedrkvk e tuleL;kvk l fuiVu l t;knk t:jh 'kgjk dk uke ifjru g\ vkj ;fn ,lk g rk ;g ykx viu pukoh ?kk"k.kki= ;k ldYi i= e bu ckrk dk mYy[k D;k ugh djr\

चर्चा में आना है तो कुछ ऐसी बात बोल दीजिए ...

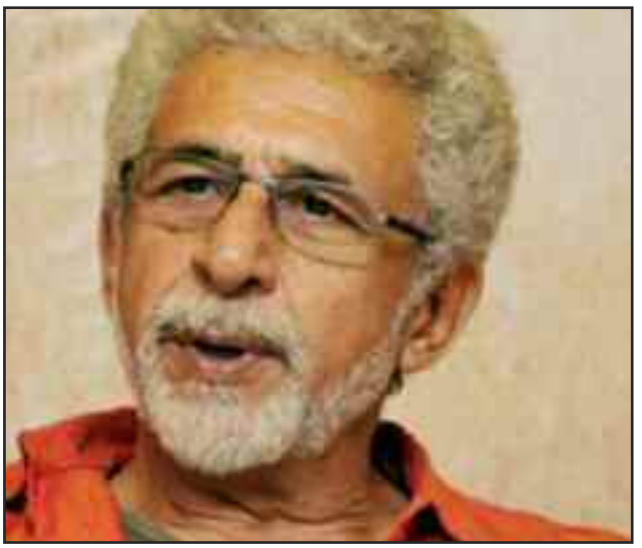

—अवधेश कुमार

फिल्म अभिनेता नसीरुद्दीन शाह के बयान पर मचा बवाल. स्वाभाविक है। यह सोशल मीडिया के ज्वार का दौर है। पूरा फेसबुक, ट्विटर नसीरुद्दीन शाह से भरा हुआ है। नसीरुद्दीन ने भी अपनी बात कहने के लिए सोशल मीडिया का ही उपयोग किया और उसे वायरल कराने की कोशिश की। यूट्यूब पर इसे सुनने वालों की संख्या उनके सारे वीडियो को पार कर गया है। इस समय के माहौल में आपको चर्चा में आना है तो कुछ ऐसी बातें बोल दीजिए जो आग लगाने वाली हों, बड़े समूह को नागवार गुजरने वाला हो, उनके अंदर उत्तेजना पैदा कर सकता है३.आपक सीधे लाइमलाइट में आ गए। लोग गाली दें या प्रशंसा करें आप चर्चा में बने रहेंगे। नसीरुद्दीन शाह भले गुमनाम न हों, लेकिन काफी समय से चर्चा में नहीं थे।

अब की स्थिति देख लीजिए। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान तक नसीरुद्दीन शाह की बात पहुंच गई। उन्होंने बाजाब्ता अपने भाषण में इसकी चर्चा करते हुए मोहम्मद अली जिन्ना के विचारों से इसकी तुलना कर दी। वे कह रहे हैं कि जिन्ना साहब ने इसलिए पाकिस्तान की मांग की और लड़ाई लड़के अलग देश बनाया क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि अंग्रेजों से आजादी की लड़ाई के बाद मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक बनकर जीना होगा जो उन्हें स्वीकार नहीं है और आज मोदी के शासनकाल में वही हो रहा है जिसकी आशंका जिन्ना साहब ने व्यक्त की थी।

इस तरह पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की नजर में नसीरुद्दीन शाह की बात भारत में मुसलमानों के डर में जीने या दोयम दर्जे का जीवन की स्थिति का सबूत है। नसीरुद्दीन ने हालांकि इमरान की बातों का प्रतिवाद किया है, पर अगर वे ऐसा नहीं बोलते तो इमरान को भारत क् बारे में दुष्प्रचार का अवसर नहीं मिलता। कश्मीर केन्द्रित आतंकवादियों और उनको प्रश्रय देने वालों के बीच नसीरूद्दीन के वीडियो सुनाने की खबरे हैं। इसे कुछ लोग मानवाधिकार संगठनों को भी भेज रहे हैं तथा इस्लामिक सम्मेलन संगठन या ओआईसी में भी इसे लाने की कोशिशें हो रही हैं। पता नहीं इस बयान का कहां—कहां किस रुप मे भारत के खिलाफ उपयोग होगा। यही पहलू चिंतित करता है कि जो देश के सिलेब्रिटिज हैं उनको बयान देते समय कितना विचार करना चाहिए। किंतु भारत में ऐसे तथाकथित बड़े लोगों और सिलेर्बिटिज की संख्या बढ़ गई है जिनके लिए पता नहीं देश की इज्जत और छवि से बड़ा क्या है? सोशल मीडिया पर जो गालियां दे रहे हैं या उनको पाकिस्तान चले जाना चाहिए जैसी बातें लिख बोल रहे हैं उनसे सहमति नहीं। किंतु यह स्वीकारना होगा कि नसीरुद्दीन ने जो कहा उससे भारी संख्या में भारतीयों की भावनाओं को धक्का लगा है। वे ऐसा नहीं बोलते तो भारत विरोधियों को उसे जगह—जगह उपयोग करने का हथियार हाथ नहीं आता।

नसीरुद्दीन कह रहे हैं कि मुझे समझ में नहीं आता कि मैंने ऐसा क्या कह दिया जिससे इतना बावेला मचा है। वे कह रहे हैं कि जिस मुल्क से मैं प्यार करता हूं, जो मेरा मुल्क है उसके हालात पर चिंता प्रकट करना मेरा अधिकार है। यदि दूसरे मेरी आलोचना करते हैं तो उनकी आलोचना करने का मेरा भी अधिकार है। निस्संदेह, आपको इसका अधिकार है। किंतु सर्वसाधारण से आपकी जिम्मेवारी ज्यादा है। जब आप कहते हैं कि मुझे फिक्र होती है अपने बच्चों के बारे में कि यदि वे बाहर निकले और भीड़ ने उन्हें घेर लिया और उनसे पूछा कि तुम हिन्दू हो कि मुसलमान तो वे क्या जवाब देंगे तो इसका संदेश यह निकलता है कि भारत में सड़क चलते लोगों से भीड़ धर्म पूछकर हिंसा करती है। वे कह रहे हैं कि हालात सुधरने का तो मुझे कोई आसार नहीं दिखता। भारत में ऐसी स्थिति बिल्कुल नहीं है। जाहिर है, उन्होंने किसी और इरादे से सोच—समझकर ऐसा सांप्रदायिक बयान दिया है जिसकी निंदा करनी ही होगी। उन्होंने अपने बयान के लिए बुलंदशहर की हिंसा को आधार बनाया है। बुलंदशहर की हिंसा उत्तरप्रदेश प्रशासन की शर्मनाक विफलता थी। हालांकि हिन्दू मुसलमानों के बीच के एक बड़े सांप्रदायिक हिंसा की साजिश भी विफल हुई। नसीरुद्दीन ने उनकी आलोचना नहीं की जिनने गायों को काटकर उनके सिर और चमड़े आदि ठीक सड़क के किनारे ईंख की खेतों में छोड़ दिए थे। लोगों में गुस्सा था और पुलिस इंस्पेक्टर जो थोड़े लोग आरंभ में विरोध करने आए उनको ही

धमका रहा था। इसका वीडियो भी सामने आ गया है कि उसने गोली चला दी जिससे एक नवजवान की मौत हो गई। एक ओर कटे गायों के अवशेष, दूसरी ओर नवजवान की मौत के बाद वहां क्या स्थिति पैदा हुई होगी इसको समझे बगैर कोई बात करने का अर्थ ही है कि आप किसी दुराग्रह से भरे हैं। ऐसा दुराग्रह आग बुझाने की जगह उस पर पेट्रॉल डालने का काम करता है। क्या हम भूल जाएं कि बुलंदशहर में चल रहे तब्लीगी इज्तमा में लाखों मुसलमान एकत्रित थे? गोकशी के कारण गुस्सा अगर चारों ओर फैलता तो क्या रुप लेता इसकी कल्पना से ही सिहरन पैदा हो जाती है। आरोपी पकड़े जा चुके हैं।

यह ठीक है कि हिन्दू भी अब आक्रोशित प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगे हैं। किंतु यह अपने–आप नहीं हुआ है। इसका कारण लंबे समय तक जगह–जगह अल्पसंख्यकों द्वारा मजहबी अतिवादिता का व्यवहार तथा शासन द्वारा उनका संरक्षण और प्रोत्साहन रहा है। इस मूल पहलू की अनदेखी कर कोई भी एकपक्षीय प्रतिक्रिया दुराग्रहपूर्ण होगी। वैसे भी देश में कहीं ऐसी स्थिति नहीं है कि बहुसंख्यक समाज अल्पसंख्यकों को डर में जीने को मजबूर कर रहा है। कुछ दुखद घटनाओं को बढ़ा–चढ़ाकर और सांप्रदायिक रंग देकर पेश किया गया लेकिन जब जाचं हुई तो उसके कारण अलग निकले। जिस तरह का भयावह चित्र नसीरुद्दीन प्रस्तुत कर रहे हैं। वैसी स्थिति भारत में न थी न हो सकती है। हमारे यहां कानून का शासन है और इसको जो भी तोड़ने की कोशिश करेगा तो उसे प्रावधानों के अनुसार परिणाम भगतना पड़ेगा। इमरान खान अपने गिरेबान में झांके। इसी वर्ष अप्रैल में मानवाधिकार की रिपोर्ट में पाकिस्तान के बारे में जो कहा गया उससे उनका सिर शर्म से झुक जाना चाहिए। इसमें कहा गया है कि विचार, विवेक और धर्म की आजादी को लगातर दबाया गया, नफरत और कट्टरता को बढ़ाया गया तथा सहनशीलता और भी कम हुई। सरकार अल्पसंख्यकों पर जुल्म के मुद्दे से निपटने में अप्रभावी रही और अपने कर्तव्यों को पूरा करने में नाकाम रही। आयोग ने कहा कि ईसाई, अहमदिया, हजारा, हिन्दू और सिख जैसे धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा में कोई कमी नहीं आई और वे सभी हमलों की चपेट में आ रहे हैं। धार्मिक अल्पसंख्यकों की आबादी कम हो रही है। पाकिस्तान की स्वतंत्रता के वक्त अल्पसंख्यकों की आबादी 20 प्रतिशत से ज्यादा थी जबकि 1998 की जनगणना के मुताबिक यह संख्या घटकर अब तीन प्रतिशत से थोड़ी ज्यादा है। 1947 में पाकिस्तान की 15 प्रतिशत हिन्दू 1.5 प्रतिशत तक सिमट गई है। चरमपंथी पाकिस्तान के लिए विशिष्ट इस्लामिक पहचान बनाने पर अमादा हैं और ऐसा लगता है कि उन्हें पूरी छूट दी गई है। सिंध में हिन्दू असहज हालात में रहने को मजबूर हैं। समुदाय की सबसे बड़ी चिंता जबरन धर्मांतरण है। लड़कियों को अगवा कर लिया जाता है. उनमें से अधिकतर नाबालिग होती हैं। उनको जबरन इस्लाम में धर्मांरित किया जाता है और फिर मुस्लिम व्यक्ति से शादी कर दी जाती है।

भारत में तो हम ऐसी स्थिति की दुःस्वप्नों में भी कल्पना नहीं कर सकते। यदि जिन्ना ने ऐसे पाकिस्तान की कल्पना की जिस पर इमरान को संतोष है तो ऐसा देश और समाज उनको मुबारक हो। हमारे देश में तो जिन मुसलमानों की आबादी 1951 की जनगणना में 8 प्रतिशत से कम थी वह 15 प्रतिशत के आसपास है। पाकिस्तान से अधिक मुसलमान भारत में हैं। भारत में कोई नेता, मंत्री, बुद्धिजीवी कभी पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों की स्थिति को मुद्दा नहीं बनाता। उनके बयान पर हमारे प्रधानमंत्री उस तरह नहीं बोलते जिस तरह इमरान ने नसीरुद्दीन के वक्तव्य पर बोला जबकि यह झूठ है और पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की दुर्दशा सच है। नसीरुद्दीन या उनके जैसे तथाकथित प्रगतिशील सेक्यूलर लोग पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के पक्ष में कभी आवाज नहीं उठाते। नसीरुद्दीन को इस देश ने सब कुछ दिया। उनकी फिल्म देखते समय हमने नहीं सोचा कि वो मु. सलमान हैं। उन्हें पद्मभूषण तक से नवाजा गया। इसके बावजूद यदि उन्हें अपने बच्चों को लेकर इस देश में फिक्र हैं तो यही कहना होगा कि आप इस महान देश के प्रति कृतघ्न हैं। क्या नसीरुद्दीन को अफसोस नहीं हुआ कि उनके बयान का किस तरह पाकिस्तान भारत को बदनाम करने मे उपयोग कर रहा है, जेहादी आतंकवादी उपयोग कर रहे हैं?

–यह लेखक के निजी विचार है।

आखिर क्यों टूटते जा रहे हैं रिश्ते ?

–डॉ नीलम महेन्द्र

हाल ही में जापान की राजकुमारी ने अपने दिल की आवाज सुनी और एक साधारण युवक से शादी की। अपने प्रेम की खातिर जापान के नियमों के मुताबिक, उन्हें राजघराने से अपना नाता तोड़ना पड़ा। उनके इस विवाह के बाद अब वे खुद भी राजकुमारी से एक साधारण नागरिक बन गईं हैं। कै. म्ब्रिज के ड्यूक और ब्रिटेन के शाही परिवार के राजकुमार विलियम ने एक साधारण परिवार की कथेरिन मिडलटन से विवाह किया (2011) और आज दुनिया भर में एक आदर्श जोड़े के रूप में पहचाने जाते हैं। स्वीडन की रा. जकुमारी विक्टोरिया ने स्वीडन के एक छोटे से समुदाय से आने वाले डेनियल वेसलिंग से शादी की (2010)। डेनियल कभी उनके पर्सनल ट्रेनर हुआ करते थे। मोनाको के राजकुमार रेनियर तृतीय ने हॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री ग्रेस केली से विवाह किया (1956)।

1982 में एक कार दुर्घटना में अपनी मृत्यु तक वे मोनाको की राजकुमारी के रूप में रेनियर तृतीय ही नहीं मोनाको के लोगों के दिलों पर भी राज करती रहीं। इस प्रकार की हाई प्रोफाइल, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से बेमेल लेकिन आपसी सामंजस्य में सफल विश्व की अनेकों जोड़ियों की चर्चा के बीच अगर हम अपने देश के एक हाई प्रोफाइल जोड़े आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के बेटे तेजप्रताप और बिहार के ही एक शक्तिशाली राजनैतिक परिवार की बेटी ऐश्वर्या की बात करें तो स्थिति बिल्कुल विपरीत दिखाई देगी। यह किसी ने नहीं सोचा होगा कि 6 महीने में ही दोनों में तलाक की नौबत आ जायेगी। कहा जा सकता है कि सामाजिक और आर्थिक रूप से दोनों परिवार बेमेल नहीं थे। लेकिन फिर भी तेजप्रताप का कहना है कि हमारी जोड़ी बेमेल है और ऐसे रिश्ते को ढोते रहने से अच्छा है उससे मुक्त हो जाना। हमारे देश में इस प्रकार का यह कोई पहला मामला नहीं है लेकिन देश के एक नामी राजनैतिक परिवार से जुड़ा होने के कारण इसने ना सिर्फ मीडिया बल्कि पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और शादी एवं तलाक को लेकर एक बहस भी छेड़ दी है। भारत में लगभग 14 लाख लोग तलाकशुदा हैं जो कि कुल आबादी का करीब 0.11ः है और शादी शुदा आबादी का 0.24ः हिस्सा है। चिंता की बात यह है कि भारत जैसे देश में भी यह आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है।

अगर हम तलाक के पीछे की वजह तलाशते हैं तो चिंता और बढ़ जाती है। क्योंकि किसी को तलाक इसलिए चाहिए क्योंकि उसे अपने पार्टनर की पसीने की बदबू से एलर्जी थी तो किसी को अपने साथी की दोस्तों को बहुत अधिक उपहार देने की आदत से परेशानी थी। नागपुर के एक जोड़े ने हनीमून से लौटते ही तलाक की अर्जी इसलिए दे दी क्योंकि पति गीला तौलिया बिस्तर पर रखने की अपनी आदत नहीं बदल पा रहा था और पत्नी को सफाई की आदत थी। एक दूसरे जोड़े ने हनीमून से वापस आते ही तलाक मांगा क्योंकि पति ने एक भी दिन होटल का खाना नहीं खिलाया। दरअसल सास ने घर का खाना साथ देकर खाने पर पैसे खर्च करने से मना किया था।

दरअसल कहने को तलाक की अनेक वजह हो सकती हैं लेकिन समझने वाली बात यह है कि केस कोई भी हो तलाक की केवल एक ही वजह होती है। एक दूसरे के साथ तालमेल ना बैठा पाना, एक दूसरे के साथ सामंजस्य न होना। जी हाँ रिश्ता कोई भी हो आपसी तालमेल से बहुत सी समस्याओं को हल करके एक दूसरे के साथ सामंजस्य बैठाया जा सकता है। लेकिन समझने वाला विषय यह है कि इसके लिए एक दूसरे की सामाजिक आर्थिक या पारिवारिक पृष्ठभूमि का कोई महत्व नहीं होता जैसा कि हमने ऊपर कई बेमेल लेकिन सफल जोड़ियों के संदर्भ में देखा। अगर दिलों में फासले न हों तो सामाजिक आर्थिक या फिर पारिवारिक पृष्ठभूमि की दूरियां कोई मायने नहीं रखतीं। लेकिन अफसोस की बात है कि आज के इस भौतिकवादी दौर में जब हम लड़का या लड़की देखते हैं तो हमारी लिस्ट में लड़के या लड़की का आर्थिक पैकेज होता है उनके संस्कार नहीं, उनकी शारीरिक सुंदरता जैसे बाहरी विषय होते हैं उनके आचरण और विचारों की शुद्धता नहीं। जिस रिश्ते की नींव बाहरी और भौतिक आकर्षणों पर रखी जाती है वो एक हल्के से हवा के झोंके से ताश के पत्तों की तरह ढह जाती है। लेकिन जिन रिश्तों की नींव आत्मा और हृदय जैसे गम्भीर भावों पर टिकी होती है वो आँधियों को भी अपने आगे झुकने के लिए मजबूर कर देती हैं। इसलिए आज जब हमारा समाज उस दौर से गुजर रहा है जब शादी से तलाक तक का सफर कुछ ही माह में तय कर लिया जा रहा हो तो जरूरत इस बात की है कि हमें बाहरी आकर्षणों से अधिक भीतरी गुणों को, फा. इनैंशल स्टेटस से अधिक संस्कारों के स्टेटस को, चेहरे की सुंदरता से अधिक मन की सुंदरता को तरजीह देने होगी।

BSP

सभी देशवासियों

को

नववर्ष

एवं

गणतंत्र दिवस

की

हार्दिक शुभकामनायें

डा0 मेराज अली

प्रभारी विधानसभा

शहर, अलीगढ़

..तो बीजेपी का संविधान संशोधन होगा या अमित शाह अध्यक्ष पद की कुर्सी छोड देगें !

-पुण्य प्रसून वाजपेई

गुजरात में काग्रेस नाक के करीब पहुंच गई। कर्नाटक में बीजेपी जीत नहीं पाई। काग्रेस को देवेगौडा का साथ मिल गया मध्यप्रदेश और छत्तिसगढ में पन्द्रह बरस की सत्ता बीजेपी ने गंवा दी। राजस्थान में बीजेपी हार गई। तेलगाना में हिन्दुत्व की छतरी तले भी बीजेपी की कोई पहचान नहीं और नार्थ इस्ट में संघ की शाखाओ के विस्तार के बावजूद मिजोरम में बीजेपी की कोई राजनीतिक जमीन नहीं।

तो फिर पन्ने पन्ने थमा कर पन्ना प्रमुख बनाना, या बूथ बूथ बांट कर रणनीति की सोचना, या मोटरसाईकिल थमा कर कार्यकत्ता में रफ्तार ला देना, या फिर संगठन के लिये अथाह पूंजी खर्च कर हर रैली को सफल बना देना और बेरोजगारी के दौर में नारो के शोर को ही रोजगार में बदलने का खेल कर देना । फिर भी जीत ना मिले तो क्या बीजेपी के चाणक्य फेल हो गये है या जिस रणनीति को साध कर लोकतंत्र को ही अपनी हथेलियो पर नचाने का सपना अपनो में बांटा अब उसके दिन पूरे हो गये है । क्योकि अर्से बाद संघ के भीतर ही नहीं बीजेपी के अंदरखाने भी ये सवाल तेजी से पनप रहा है कि अमित शाह की अध्यक्ष के तौर पर नौकरी अब पूरी हो चली है और जनवरी में अमित साह को स्वत ही अद्यक्ष की कुर्सी खाली कर देनी चाहिये । यानी बीजेपी के संविधान में संशोधन कर अब जितने दिन अमित शाह अध्यक्ष बने रहे तो फिर बीजेपी में अनुशासन , संघ के राजनीतिक शुद्दिकरण की ही धज्जियां उडती चली जायेगी । यानी जो सवाल 2015 में बिहार के चुनाव में हार के बाद उठा था और तब अमित शाह ने तो हार पर ना बोलने की कसम खाकर खामोशी बरत ली थी । पर तब राजनाथ सिंह ने मोदी–शाह की उडान को देखते हुये कहा था कि अगले छह बरस तक शाह बीजेपी अध्यक्ष बने रहेगें । लेकिन संयोग से 2014 में 22 सीटे जीतने वाली बीजेपी के पर उसकी अपनी रणनीति के तहत अमित शाह ने ही कतर कर 17 सीटो पर समझौता कर लिया । तो उससे संकेत साफ उभरे कि अमित शाह के ही वक्त रणनीति ही नहीं बिसात भी कमजोर हो चली है । जो रामविलास पासवान से कही ज्यादा बडा दांव खेल कर अमित शाह किसी तरह गंठबंधन के साथियो को साथ खडा रखना चाहते है । क्योकि हार का ठीकरा समूह के बीच फूटेगा तो दोष किसे दिया जाये इसपर तर्क गढे जा सकते है लेकिन अपने बूते चुनाव लडना, अपने बूते चुनाव लडकर जीतने का दावा करना और हार होने पर खामोशी बरत कर अगली रणनीति में जुट जाना । ये सब 2014 की सबसे बडी मोदी जीत के साथ 2018 तक तो चलता रहा । लेकिन 2019 में

बेडा पार कैसे लगेगा । इसपर अब संघ में चिंतन मनन तो बीजेपी के भीतरी कंकडो की आवाज सुनाई देने लगी है । और साथी सहयोगी तो खुल कर बीजेपी के ही एंजेडे की बोली लगाने लगे है । शिवसेना को लगने लगा है कि जब बीजेपी की धार ही कुंद हो चली है तो फिर बीजेपी हिन्दुत्व का बोझ भी नहीं उठा पायेगी और राम मंदिर तो कंघो को ही झुका देगा । तो शिवसेना खुद को अयोध्या का द्वारपाल बताने से चुक नहीं रही है । और खुद को ही राममंदिर का सबेस बडा हिमायती बताते वक्त ये ध्यान दे रही है कि बीजेपी का बंटाधार हिन्दुत्व तले ही हो जाये । जिससे एक वक्त शिवसेना को वसूली पार्टी कहने वाले गुजरातियो को वह दो तरफा मार दे सके । यानी एक तरफ मुबंई में रहने वाले गुजरातियो को बता सके कि अब मोदी–शाह की जोडी चलेगी नहीं तो शिवसेना की छांव तले सभी को आना होगा और दूसरा धारा–370 से लेकर अयोध्या तक के मुद्दे को जब शिवसेना ज्यादा तेवर के साथ उठा सकने में सक्षम है तो फिर सरसंघचालक मोहन भागवत सिर्फ प्रणव मुखर्जी पर प्रेम दिखाकर अपना विस्तार क्यो कर रहे है । उनसे तो बेहतर है कि शिवसेना के साथ संघ भी खडा हो जाये यानी अमित शाह का बोरिया बिस्तर बांध कर उनकी जगह नीतिन गडकरी को ले आये । जिनकी ना सिर्फ शिवसेना से बल्कि राजठाकरे से भी पटती है और भगोडे कारपोरेट को भी समेटने में गडकरी कही ज्यादा माहिर है और गडकरी की चाल से फडनवीस को भी पटरी पर लाया जा सकता है जो अभी भी मोदी–शाह की शह पर गडकरी को टिकने नहीं देते और लडाई मुबंई से नागपुर तक खुले तौर पर नजर आती है ।

यू ये सवाल संघ के भीतर ही नहीं बीजेपी के अंदरखाने भी कुलाचे मारने लगा है कि मोदी–शाह की जोडी चेहरे और आईने वाली है । यानी कभी सामाजिक–आर्थिक या राजनीतिक तौर पर भी बैलेस करने की जरुरत आ पडी तो हालात संभलेगें नहीं । लेकिन अब अगर अमित शाह की जगह गडकरी को अध्यक्ष की कुर्सी सौप दी जाती है तो उससे एनडीए के पुराने साथियो में भी अच्छा मैसेज जायेगा । क्योकि जिस तरह काग्रेस तीन राज्यो में जीत के बाद समूचे विपक्ष को समेट रही है और विपक्ष जो क्षत्रपो का समूह है वह भी हर हाल में मोदी–शाह को हराने के लिये काग्रेस से अपने अंतर्विरोधो का भी दरकिनार कर काग्रेस के पीछे खडा हो रहा है । उसे अगर साधा जा सकता है तो शाह की जगह गडकरी को लाने का वक्त यही है । क्योकि ममता बनर्जी हो या चन्द्रबाबू नायडू , डीएमके हो या टीआर एस या बीजू जनता दल । सभी वाजपेयी–आडवानी –जोशी के दौर में बीजेपी के साथ इस लिये गये क्योकि बीजेपी ने इन्हे साथ लिया और इन्होने साथ इसलिये दिया क्योकि सभी को काग्रेस से अपनी राजनीतिक जमीन के छिनने का खतरा था । लेकिन मोदी–शाह की राजनीतिक सोच ने तो क्षत्रपो को ही खत्म करने की ठान ली और पैसा, जांच एंजेसी , कानूनी कार्वराई के जरीये क्षत्रपो का हुक्का–पानी तक बंद कर दिया । पासवान भी अपने अंतर्विरोधो की गठरी उटाये बीजेपी के साथ खडे है । सत्ता से हटते ही कानूनी कार्वाई के खतरे उन्हे भी है और सत्ता छोडने के बाद सत्ता में भागेदारी का हिस्सा सूई की नोंक से भी कम हो सकता है । लेकिन यहा सवाल सत्ता के लिये बिक कर राजनीति करने वाले क्षत्रपो की कतार भी कितनी पाररदर्शी हो चुकी है और वोटर भी कैसे इस हकीकत को समझ चुका है ये मायावती के सिमटते आधार तले मध्यप्रदेश, राजस्थान व छत्तीसगढ में बाखूबी उभर गया । लेकिन आखिरी सवाल यही है कि क्या नये बरस में बीजेपी और संघ अपनी ही बिसात जो मोदी–शाह पर टिकी है उसे बदल कर नई बिसात बिछाने की ताकत रखती है या नहीं । उहापोह इस बात को लेकर है कि शाह हटते तो नैतिक तौर पर बीजेपी कार्यकत्ता इसे बीजेपी की हार मान लेगा या रणनीति बदलने को जश्न के तौर पर लेगा । क्योकि इसे तो हर कोई जान रहा है कि 2019 में जीत के लिये बिसात बदलने की जरुरत आ चुकी है । अन्यथा मोदी की हार बीजेपी को बीस बरस पीछे ले जायेगी ।

–लेखक देश के वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कार्यालय नगर पंचायत हरदुआगंज (अलीगढ़)

समस्त नगरवासियों को नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं

रतन वर्मा
अधिशासी अधिकारी
नगर पंचायत हरदुआगंज, अलीगढ़

तिलकराज यादव
अध्यक्ष
नगर पंचायत हरदुआगंज

नगर पंचायत हरदुआगंज अपने नागरिकों से नगर के विकास हेतु अपेक्षा करती है:-

- नगर आपका है इसे स्वच्छ बनाये रखने में में सहयोग करें एवं कूड़ा भरने के बाद कूड़ा ना डालें।
- जलमूल्य का समय से भुगतान करें जल ही जीवन है पेयजल की व्यर्थ बरबादी रोकने में पंचायत का पूर्ण सहयोग करें। पेयजल की आपूर्ति के उपरान्त अपना जल संयोजन बन्द करना न भूलें।
- नगर के मार्ग एवं गलियों में स्थित प्रकाश स्तम्भों पर लगे सोडियम हाई मास्ट लाइटों को बच्चों द्वारा क्षति पहुँचाये जाने से रोकने में पूर्ण सहयोग दें।
- नगर के चहुँमुखी विकास हेतु अपने बहुमूल्य सुझाव पंचायत प्रशासन को दें।
- नगर के विकास हेतु आपसे किये गये वायदों पर नगर पंचायत हरदुआगंज प्रशासन कृत संकल्पित

अजीता
वार्ड 1

विपिन कुमार
वार्ड 2

धर्मेन्द्र कुमार
वार्ड 3

महावीर सिंह
वार्ड 4

पप्पन पहलवान
वार्ड 5

कुलदीप यादव
वार्ड 6

मुनीशा बेगम
वार्ड 7

लक्ष्मी देवी
वार्ड 8

मुन्ना राईन
वार्ड 9

चन्दन वार्ष्णेय
वार्ड 10

शशिबाला
वार्ड 11

साहेब ! कहीं #Me Too ना हो जाएं, अब डर लगता है !

मनोज झा–

आजकल मुंबई समेत देश के बड़े महानगरों में जहां देखो वहां मी टू अभियान की चर्चा है। मी टू अभियान ने किसी को नहीं छोड़ा... मोदी सरकार के एक मंत्री की जहां कुर्सी चली गई वहीं बालीवुड में बरसों से शराफत का चोला पहने कई चेहरे बेनकाब हो गए। महिलाओं के साथ यौन शोषण के खिलाफ चल रहे इस अभियान में नामी-गिरामी पत्रकार भी लपेटे में आ गए। मी टू ने देश में ऐसी लहर पैदा कर दी है कि बॉलीवुड से लेकर अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाएं सामने आकर यौन शोषण से जुड़े अपने अनुभव लोगों से साझा कर रही है। हर रोज कोई न कोई महिला सोशल मीडिया पर अपनी आपबीती सुना रही है। किसी का मामला 10 साल पुराना है तो कोई अपने साथ 5 साल पहले हुए वाकये को लोगों के साथ साझा कर रही है। हर रोज अखबार पलटते ही कोई न कोई बड़ा नाम सामने आ जाता है।

किसी बड़ी कंपनी में नौकरी या फिर फिल्मों में काम दिलाने के नाम पर महिलाओं का यौन शोषण होता है ये बात किसी से छिपी नहीं है। लेकिन अबतक किसी का चेहरा इसलिए बेनकाब नहीं होता था क्योंकि महिलाएं अपने साथ हुए वाकये को चुपचाप सहन कर जाती थी। लेकिन आज जमाना सोशल मीडिया का है... अब महिलाएं चुप नहीं बैठनेवाली। अमेरिका और पश्चिम के दूसरे देशों में मी टू मुहिम की कामयाबी ने अपने यहां भी उन महिलाओं के अंदर जोश भर दिया है जो कभी न कभी यौन शोषण का शिकार हो चुकी हैं। ये बात अलग है कि अब भी ज्यादतर मामले बालीवुड से ही आ रहे हैं। मशहूर फिल्मकार सुभाष घई, साजिद खान से लेकर कई लोगों का चेहरा पूरी तरह बेनकाब हो गया है। फिल्मों में रोल दिलाने के बहाने महिलाओं को परेशान करनेवाले लोग पूरी तरह डरे हुए हैं।

बॉलीवुड में कुछ लोगों को छोड़कर हर कोई मी टू अभियान का समर्थन कर रहा है...कल तक जो हीरोइन किसी बड़े चेहरे का नाम लेने से डरती थी...आज इस मुहिम के चलते अपने साथ हुई बर्ताव को दुनिया के सामने ला रही है। वैसे अबतक जितने बड़े नामों का चेहरा उजागर हुआ है वो खुद को पाक–साफ बताने में लगे हैं। कोई अपनी छवि खराब करने का आरोप लगा रहा है...तो कोई इसे बदले की भावना से की गई कार्रवाई बता रहा है। किसी की दलील है कि अगर किसी महिला के साथ 10 साल पहले किसी तरह की घटना हुई तो वो अबतक चुप क्यों बैठी रही। कुछ लोगों का मानना है कि ये सब पब्लिसिटी हासिल करने के लिए किया जा रहा है। लेकिन मैं इस बात से इत्तिफाक नहीं रखता। अभिनेता नसीरुद्दीन शाह की माने तो महिलाओं का सामने आना अच्छी बात है लेकिन उनके लगाए आरोपों की गंभीरता से जांच भी होनी चाहिए क्योंकि हो सकता है कि मामले का कोई दूसरा पहलू भी हो। लेकिन अगर आप समझ रहे होंगे कि मी टू अभियान को महिलाओं का 100 फीसदी समर्थन हासिल है तो आप गलत हैं। मैंने इसे लेकर जब एक–दो महिलाओं से बात की

और उनकी राय जानने की कोशिश की तो उनका कहना था...अगर किसी महिला के साथ यौन शोषण हुआ तो वो 10 या 15 साल तक चुप क्यों बैठी रही ?

सवाल चुप बैठने का नहीं है...सवाल महिलाओं की अस्मिता से जुड़ा है...देर से ही सही मी टू मुहिम ने उन महिलाओं को बोलने की ताकत दी है जो अभी तक घुट–घुट कर जी रहीं थी...आज महिलाएं इस स्थिति में पहुंच गई हैं कि वो लोगों के सामने अपनी बात बेबाकी से रख रही हैं।

आज पीड़ित महिला सामने आकर दुनिया को बता रही है कि दफ्तर में अपने केबिन में बुलाकर बॉस ने उसे कहां–कहां छुआ...कभी पगार बढ़ाने के नाम पर शोषण हुआ...तो कभी प्रमोशन के नाम पर... फर्क सिर्फ इतना था कि पहले किसी बॉस का चेहरा बेनकाब नहीं होता था। आज हर बड़े दफ्तर में वो अधिकारी डरा हुआ है जिसने कभी किसी महिला सहकर्मी के साथ इस तरह का बर्ताव किया है। दफ्तरों में महिलाओं के उत्पीड़न रोकने के लिए विशाखा गाइडलाइंस तो लागू हो गया लेकिन उस पर अमल कभी नहीं हुआ। सच्चाई यही है कि जो काम विशाखा गाइडलाइंस नहीं कर सका अब वो मी टू अभियान कर रहा है द्य

मेरे कई मित्रों ने बताया कि अब वो दफ्तरों में महिलाओं से हाथ मिलाने से भी परहेज करने लगे हैं...उन्हें लगता है कि क्या पता कभी कोई महिला बुरा मान जाए और उसे बाद में परेशान होना पड़े। मी टू अभियान से लोग कितने डरे हुए हैं इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बिग बॉस के पूर्व कंटेस्टेंट कमाल राशिद खान ने दुबई और मुंबई में अपने दफ्तर से सभी महिला कर्मचारियों की छुट्टी कर दी है। केआरके की माने तो ऐसा उन्होंने अपनी पत्नी के कहने पर किया है। मी टू का असर देखिए...अभिनेता दिलीप ताहिल ने अभी हाल ही में एक फिल्म की शूटिंग के दौरान रेप सीन करने से मना कर दिया। जब डायरेक्टर ने बताया कि सीन फिल्म के लिए जरूरी है तो अभिनेता ने कहा पहले हीरोइन से लिखित में लो कि उसे रेप सीन करने से पहले और बाद में कोई दिक्कत नहीं है। अब इसे मी टू का डर नहीं तो और क्या कहेंगे? मुझे लगता है कि हमें मी टू अभियान का समर्थन करना चाहिए....मेरा मानना है कि अगर आप गलत नहीं हैं तो आपको डरने की कोई जरूरत नहीं है।

अलीगढ की महिला शक्ति ने यदि शुरू किया #MeToo तो बेनकाब होंगे तमाम 'चेहरे'

- चारू चौहान

महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों और उनके शोषण की घटनाओं ने देश के प्रत्येक नागरिक को सोचने पर मजबूर कर दिया है। पिछले कुछ वर्षो में देश के विभिन्न राज्यों और शहरों से महिलाओं पर क्रूरतापूर्ण अपराधों और दिल दहलाने वाली वारदातों की खबरों ने सभी को स्तब्ध कर दिया है। छोटे महानगरों और शहरों में भी अब महिलाओं को जागरूक करने और अधिकारों कि आवाज बुलंद करने की प्रेरणा देने के लिए विभिन्न सामाजिक संगठन और महिला सामाजिक कार्यकर्ता सक्रिय हैं। यूपी के अलीगढ को यूँ तो तहजीब और तालीम के शहर के रूप में जाना जाता है लेकिन इसी शहर में कई सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी अपनी अलग पाह्चन है। महिलाओं के उत्थान एवं सशक्तिकरण के लिए कार्य करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता चारू चौहान से व्यवस्था दर्पण ने महिलाओं से जुड़े कई बिन्दुओं पर चर्चा की।

पेश हैं उनसे बातचीत के प्रमुख अंश-

व्यवस्था दर्पण : महिलाओ के उत्पीड़न की घटनाएं बड़ी हैं, क्या कारण हैं ?

चारु चौहान : महिलाओं के उत्पीडन की घटनाऐ वाकई में बढती ही जा रही हैं। इसका सबसे बड़ा कारण आदमी की मानसिकता है। आज के समय में आदमी की मानसिकता बहुत ज्यादा गंदी हो चुकी है, आदमी किसी की उम्र का ख्याल भी नहीं कर रहा है। वह ना तो बच्ची देख रहा है न ही बुढी। हमारे देश में जब तक लोग अपनी सोच को नहीं बदलेगे तब तक ऐसी घटनाएं बढ़ती रहेगी। पुरुषों को महिलाओं के प्रति अपना नजरिया बदलना पढ़ेगा ।

व्यवस्था दर्पण : महिला सशक्तिकरण के दावे तमाम संगठन और पार्टी करते हैं, आप इस दौर की नारी शक्ति को कितना सशक्त मानती हैं ?

चारू चौहान : हाँ कुछ संगठन सिर्फ दावे करते हैं महिला सशक्तिकरण के, और पार्टियाँ भी खूब वायदे करती हैं लेकिन सत्ता में आते ही भूल जाती हैं। बस भाषणबाजी की, चार लोगों को इकठ्ठा किये और चार बात बड़ी–बड़ी बोल दी, ज्यादा हुआ तो कैंडल जला दी। पार्टियों और संगठनों को इससे आगे बढ़कर धरातल पर काम करने की जरुरत है । मैं इस देश की नारी को बहुत सशक्त मानती हूं। आज की नारी हर क्षेत्र में आगे है। आज की नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिला के खड़ी है। हर जगह पुरुष के बराबर है, और बराबर क्या पुरुष से बेहतर है। नारी घर भी संभाल रही है, बच्चे भी और समाज भी।

व्यवस्था दर्पण : महिला संगठन सिर्फ अखबार बाजी और फोटो तक सीमित हो गए हैं, महिलाओं के मुद्दों पर मौन रहते हैं, क्यों ?

चारू चौहान : जी मैं काफी हद तक आपकी बात से सहमत हूँ लेकिन कई आइसे भी संगठन हैं जो मीडिया और लाइम–लाईट से अलग हटकर काम कर रहे हैं । महिलाओं के मुद्दे पर खुद मि. हलाओं को आगे आना होगा, खुद पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ खुलकर बोलना होगा तभी अपराध रुक सकेंगे ।

व्यवस्था दर्पण : अलीगढ़ में इनर व्हील क्लब के कई संगठन है, आपके संगठन में क्या विशेष है ? आपकी प्राथमिकताए हैं ?

चारू चौहान : हाँ जी! अलीगढ में इनर व्हील के 8 संगठन हैं और सारे संगठन का एक ही काम है वो है समाज की सेवा, जरूरतमदों की मदद। हमारा सगठन भी वही कर रहा है। हमारे संगठन ने एक विशेष काम यह किया है की हमने उन महिलाओं की तरफ ध्यान दिया है जो समाज से थोड़ा सा कट सी गई है। मेरा मतलब उन महिला कैदियों से है। हमारे संगठन की ओर से महिला जेल में महिलाओं की हाइजिन को ध्यान मे रखते हुए एक पेड वेंडिंग मशीन लगाई है और साथ ही उनके गंदे पैड्स के लिए पैड डिस्ट्रॉय मशीन भी लगाई गई है। हालाँकि पैड मशीन तो लगभग सभी संगठनों ने लगाई है लेकिन डिस्ट्रॉय मशीन हमारे संगठन ने ही लगाई है। हम महिला सुरक्षा के मुद्दे पर बेबाकी से बोलते है, महिलाओं को जागरूक करने का भी काम कर रहे हैं ।

व्यवस्था दर्पण – #MeToo चर्चाओं में है, इसे किस नजरिये से देखती हैं ? #Metoo पर आपकी प्रतिक्रिया है ?

चारू चौहान : # MeToo मैट्रो शहरों में अभी चर्चाओं में है पर अभी भी छोटे शहरों और महानगरों में बहुत से लोगों को इसके बारे मे नहीं पता है। मेरे नजरिये से यह # Me too बहुत अच्छी मुहिम चली है। धन्यवाद करुगीं उन अमेरिकन महिला तराना गुडके जी का जिन्होंने इस मुहिम की शुरुआत की। इस मुहिम के जरिए लड़कियां अपनी बातों को दूसरों के सामने रख पा रही हैं। और विशेष बात यह है कि इसने महिलाओं को बोलने का अवसर दिया है ।

व्यवस्था दर्पण – क्या अलीगढ़ जैसे शहरों में रुडमज्वव अभियान कभी आएगा ? क्या छोटे शहरों की महिलाएँ और युवतियां बेझिझक अपनी बात कभी कह पाएंगी ?

चारू चौहान : हाँ बिलकुल, अलीगढ़ जैसे शहर में भी ये अभियान आना चाहिए। जैसा कि मैं पहले भी बोल चुकी हूँ कि लोगों को अपनी सोच को बदलना पड़ेगा। हमारे समाज की महिला को भी अपनी सोच को बदलना पड़ेगा और अपने हक में बोलना भी पड़ेगा। जब तक महिलायें बोलेंगी नहीं, अपने हक के लिए लडेंगी नहीं तब तक वो यूँ ही प्रताड़ित होत रहेंगी। अलीगढ में यदि लड़कियों/महिलाओं ने बोलना शुरू किया तो #MeToo में तमाम बड़े लोग बेनकाब होंगे । इसलिए मेरा तो यही आव्हान है कि अलीगढ की महिला शक्ति बोलो और इस # MeToo अभियान के जरिए अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाने की हिम्मत करो, खुद के साथ हुए अन्याय को बुलंद करो।

सामाजिक कार्यकर्ता चारू चौहान ने इन सवालो के आलावा भी विभिन्न मुद्दों पर बेबाकी से जवाब दिए । अपनी स्माइल के साथ उन्होंने व्यवस्था दर्पण को शुक्रिया बोला और महिलाओं के मुद्दे उठाने के लिए आभार व्यक्त किया ।

यूपी में भाजपा का सफाया करेगा सपा, बसपा और रालोद का गठबंधन

सपा बसपा और रालोद के मिलने से प्रदेश में जाट-मुस्लिम-यादव-दलित का गठजोड़ तो होगा ही, साथ ही पिछड़े, सरकार से रूठे सवर्ण जब इस गठजोड़ में तड़का लगायेंगे तो 2019 में राजनैतिक पंडितों के सारे अनुमान धराशायी हो जाएगे।

— जियाउर्रहमान

नववर्ष 2019 में प्रवेश करते ही देश की सियासत में भी हलचल शुरू हो गयी है। हिदुस्तान की राजनीति में यूं तो लंबे अरसे से केन्द में सत्ता की लड़ाई दिलचस्प रही है। लेकिन 2014 में केन्द्र में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आई भाजपा ने सभी को स्तब्ध कर दिया था । पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा ने दिल्ली में डेरा डाला तो एक एक कर दर्जन भर से अधिक राज्यों में भगवा पताका फहरा उठी। 2014 में देश के लोगों को काला धन लाने, भ्रष्टाचार दूर करने, किसानों को समृद्ध बनाने और युवाओं को रोजगार देने का वायदा मोदी का ऐसा चला कि भाजपा ने कांग्रेस सहित अन्य दलों को बहुत पीछे ढकेल दिया। वक्त बदला सत्ता में साढ़े चार साल से अधिक का समय बीता, लेकिन न तो वायदे पूरे हुए और न ही कोई विशेष बदलाव व्यवस्था में हो पाया। हां, इतना जरूर रहा कि नोटबंदी और जीएसटी जैसे फैसले भी देश के लोगों को झेलने पड़े। हालांकि, मोदी सरकार के केन्द्र में आते ही हिदूंवादी संगठनों का उग्र रूप भी देश के विभिन्न हिस्सों में समय समय पर देखने को मिला। जब वायदे पूरे न हो सके तो आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद ने सरकार के अंतिम वर्ष में राम मंदिर का राग भी छेड़ा लेकिन लोगों में कोई उत्साह नहीं देखने को मिल सका।

लोगों का मानना है कि दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर जाता है और नववर्ष में यूपी की सियासत में जो कुछ रा. जनैतिक घटनाक्रम होने जा रहा है उसने भाजपा हाईकमान की बेचैनी बढ़ा दी है।

यूपी की सियासत में कभी समाजवादी पार्टी, तो कभी बहुजन समाज पार्टी का सिक्का चलता आ रहा है। पश्चिमी यूपी में किसानों में सक्रिय राष्ट्रीय लोकदल भी अपना एक अलग महत्व रखता है। लंबे समय से यूपी में सपा बसपा और रालोद के गठबंधन की खबरें मीडिया में आ रही है। 2019 में संभावना जताई जा रही है कि यह गठबंधन आधिकारिक तौर पर अस्तित्व में सामने आ जाएगा। एक दूसरे के धुर विरोधी रहे सपा सुप्रीमों अखिलेश यादव और बसपा सुप्रीमों मायावती के एक हो जाने के कई महत्व है। वहीं, दोनों के साथ पश्चिमी यूपी में वर्चस्व रखने वाला छोटे चौधरी अजित सिंह का राष्ट्रीय लोकदल भी यदि साथ मिल जाए तो फिर यूपी की सियासत की तस्वीर ही बदल जायेंगी। सपा और बसपा से जुड़े सूत्रों की माने तो जनवरी के तीसरे

सप्ताह में माया और अखिलेश के साथ चौधरी अजित सिंह के एक होने की खबर आधिकारिक रूप से आम हो जायेंगी।

दरअसल समाजवादी पार्टी का पूर्वी यूपी सहित पश्चिम के कई जिलों में यादव – मुस्लिम का फैक्टर हावी है जिसमें पिछड़े मिलकर तड़का लगा देते है। वहीं पश्चिमी यूपी सहित पूर्वांचल में बहुजन समाज पार्टी का दलित–मुस्लिम का फैक्टर सूबे में कई बार सत्ता में आ चुका है जिसमें कभी ब्राम्हण तो कभी पिछड़े मिलकर सरकार बना चुके है। वहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय लोकदल जाट–मुस्लिम गठजोड़ के साथ सत्ता की चाबी रहा है और किसानों की सियासत के दम पर पश्चिम में अपना वर्चस्व रखता है। सपा बसपा और रालोद के मिलने से प्रदेश में जाट–मुस्लिम–यादव–दलित का गठजोड़ तो होगा ही, साथ ही पिछड़े, सरकार से रूठे सवर्ण जब इस गठजोड़ में तड़का लगायेंगे तो 2019 में राजनैतिक पंडितों के सारे अनुमान धराशायी हो जाएगे। वहीं आवारा पशुओं की मार झेल रहे प्रदेश के किसान, बेरोजगार युवा और महंगाई से त्रस्त आम आदमी जब इस गठबंधन के साथ जाएगा तो यूपी को लहर को रोकना शायद ही किसी के बस की बात हो। यूपी की सियासत में जनवरी 2019 में जो घटनाक्रम होगे उनके दूरगामी परिणाम होगे।

2014 में केन्द्र और 2017 में यूपी की सत्ता में प्रचंड बहुमत से आयी भाजपा के लिए सपा, बसपा और रालोद का गठबंधन न सिर्फ खतरे की घंटी है बल्कि स्वयं के अस्तित्व को बचाने की चुनौती भी है। यूपी की करीब 78 लोकसभा सीटों पर यह गठबंधन चुनाव लड़ेगा जिसके जातीय गठजोड़ को तोड़ना भाजपा के थिंक. टैंकों को आसान नहीं होगा। अभी से यूपी में हो रहे तीन दलों के इस गठबंधन से पहले ही भाजपा में हलचल मची हुई है। हा. ईकमान से लेकर जिला स्तर पर बैठकों का दौर जारी है और गठबंधन से पार पाने का इलाज ढूढ़ा जा रहा है। राम मंदिर निर्माण को लेकर यूपी में लोगों की मांग बढ़ने लगी है, नववर्ष से ठीक पहले नवम्बर और दिसम्बर के पहले सप्ताह अयोध्या देश के मीडिया में छायी रही। आरएसएस, विहिप धर्मसभा की तो वहीं महाराष्ट्र से आकर शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने भी अयोध्या में राम मंदिर के लिए हुंकार भरी। संसद में अध्यादेश लाने का दबाब सरकार पर बढ़ा लेकिन पीएम मोदी ने एक साक्षात्कार में अध्यादेश लाने से साफ इंकार कर दिया। जिसका असर भी 2019 में देखने को मिल सकता है। खुद भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एक साक्षात्कार के दौरान इस गठबंधन को चुनौती बता चुके है। औटा के अध्यक्ष डा. मुकेश भारद्वाज कहते है कि यूपी में सपा, बसपा और रालोद का मिलन भाजपा का सफाया कर देगा। वह यह भी कहते है कि यदि क्षेत्रीय दलों का यह गठबंधन बना तो भाजपा को यूपी में दर्जन भर सीटें जीतना भी मुश्किल होगा।

2019 में यूपी में हो रहा गठबंधन न सिर्फ यूपी में भाजपा का सफाया करेगा बल्कि केन्द्र में 2019 में भाजपा को रोकने के लिए मील का पत्थर भी साबित होगा। हालांकि सियासत में कब क्या हो, कहा नहीं जा सकता। लेकिन इतना तय है कि जिस तरह सपा सुप्रीमों अखिलेश यादव और बसपा सुप्रीमों मायावती की जुगलबंदी हो रही है, भाजपा के लिए बड़े खतरे की घंटी है। वहीं रालोद के चौधरी अजित सिंह और जयंत चौधरी का अखिलेश और माया के साथ जाने के संकेत इसमें तड़के के बराबर है। अब देखना यह है कि 2019 में सपा बसपा और रालोद के मिलन की खबरें किस हद तक सही साबित होती है।

–लेखक व्यवस्था दर्पण के संपादक है।

मोदी मैजिक खत्म, 2019 में नये प्रधानमंत्री के लिए तैयार रहे देश

बीजेपी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तिगत करिश्मे के सहारे चुनाव दर चुनाव जीत रही थी, लेकिन अभी जीत का सिलसिला अचानक टूट जाना यह बताता है कि मोदी का करिश्मा चल नहीं पा रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को न सिर्फ एकजुट विपक्ष की ओर से बड़ा चौलेंज मिलेगा, बल्कि उन्हें अपनी पार्टी के भीतर से भी चुनौती मिल सकती है।

–बरुण कुमार सिंह

पांच राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम में जो चुनाव के परिणाम आये हैं, उसकी गूंज आने वाले 2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव में भी दिखायी देंगे। लोकतंत्र के इस मंदिर की चौखट पर विराजमान दृश्य कुछ ऐसा है जिसमें व्यवस्था की सफाई–धुलाई के कोई आसार नहीं है। हालात किसी एक पार्टी तक ही सीमित नहीं, बल्कि सभी प्रमुख दलों में टिकटों की दावेदारी में कांग्रेस, भाजपा और इसके साथ ही कोई भी अन्य दल इनसे अछूता नहीं है। वैसे सच यह है कि व्यक्ति विशेष की छवि से कहीं ज्यादा पैसे का महत्व हावी है। टिकटों की छीना–झपटी में पैसे व प्रलोभन की भूमिका को भांपा जा सकता है।

पांच राज्यों की ताजा चुनाव परिणाम शायद इसी ओर इशारा कर रहे हैं कि वर्ष 2014 वाला जादू, दूसरे शब्दों में जुमला शायद अब ना चले। क्योंकि जनता अब चाय बेचने वाला मोदी, चाय पर चर्चा, आदर्श गांव, स्मार्ट सिटी, स्टार्टअप इंडिया, प्रधान चौकीदार, मन की बात, शब्दों का जादू, शायद अब उसे लुभा नहीं पा रही है या वह इन शब्दों के हकीकत से रू–ब–रू हो चुकी है, जनता द्वारा किये गये वोट शायद इसी की ओर इशारा कर रहे हैं और सरकार को इससे सबक लेना चाहिए। व्यर्थ के मुद्दे, जो वादा पूरा नहीं किया जा सकता, उसे सिर्फ चुनाव जीतने के लिए हथकंडों के रूप में उपयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि एक निश्चित समय के बाद नेताओं द्वारा किये गये वायदे उनके लिए ही आफत लेकर आते हैं और स्थिति ऐसी बनती है कि उन्हें न तो उससे निगलते बनता है और न उगलते बनता है। उनकी स्थिति सांप–छूछूंदर वाली बन जाती है।

एग्जिट पोल के परिणाम को धत्ता साबित करते हुए छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने बीजेपी को बुरी तरह से हरा दिया है और एकतरफा बहुमत हासिल किया है। जबकि राजस्थान में कांग्रेस को जादुई आंकड़े से एक सीट कम मिला है, जितना सीट वह अनुमान लगा रही थी, उससे कम मिला है। वहीं मध्यप्रदेश में बहुमत के आंकड़ों से दो सीट कम मिला है। मध्यप्रदेश और राजस्थान में तमाम नाराजगी के बावजूद बीजेपी के लिए सूपड़ा साफ जैसी स्थिति कहीं नहीं है और दोनों बड़े हिंदीभाषी राज्यों में उसने कांग्रेस को कांटे की टक्कर दी है। तेलंगाना में तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) ने बीजेपी और कांग्रेस दोनों को ही बुरी तरह से धो डाला है। मिजोरम में कांग्रेस के हाथ से सत्ता चली गई है, वहां सत्ता मिजो नेशनल फ्रंट (एमएनएफ) के हाथों आ गयी है।

आज किसान अपने फसल का दाम, जनता नोटबंदी की मार, बिजनेस करने वाले को अभी तक जीएसटी समझ नहीं आ रही है और बेरोजगार नौकरी के नाम पर हताशा में हैं। केंद्र सरकार येन–केन प्रकारेण रिजर्व बैंक के बटुए को साफ करने पर लगी

हुई है और शायद यह भी कारण हो कि गवर्नर उर्जित पटेल की अंतरात्मा झकझोर रही हो और अब इतने समय तक सरकार का साथ देने के बाद उन्हें और कोई उपाय नहीं लग रहा हो जबकि उनके कार्यकाल का अब सिर्फ नौ महीना बचा हुआ था, तब उन्हा. ने निजी कारणों का हवाला देते हुए इस्तीफा दे दिया। लेकिन इस्तीफे के पीछे उनका आरबीआइ की स्वायत्ता और उसके रिजर्व को सरकार को ट्रांसफर किए जाने समेत अन्य अहम मुद्दों पर सरकार के साथ टकराव चल रहा था।

केंद्र सरकार को उर्जित पटेल के इस्तीफा देने के एक दिन बाद ही आर्थिक मोर्चे पर एक और बड़ा झटका लगा है। वरिष्ठ अर्थशास्त्री सुरजीत भल्ला ने प्रधानमंत्री की इकोनॉमिस्ट एडवायजरी काउंसिल से इस्तीफा दे दिया है। भल्ला का इस्तीफा ऐसे समय में आया है जब बीते पन्द्रह महीनों में तीन अर्थशास्त्री सरकार का साथ छोड़ चुके हैं। सबसे पहले अगस्त 2017 में नीति आयोग के पहले उपाध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया ने अपना पद छोड़ा था, इसके बाद जून 2018 में पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यम ने इस्तीफा दिया और 10 दिसंबर को आरबीआई गवर्नर उर्जित पटेल ने इस्तीफा दे दिया।

विधानसभा चुनावों के नतीजों ने जनता के बदलते मन–मिजाज की एक झलक पेश की है। इन चुनावों को 2019 के आम चुनाव का सेमी फाइनल माना जा रहा है, इसलिए इनके नतीजों में सभी राजनीतिक दलों के लिए कुछ न कुछ संदेश जरूर छिपा है। यह बानगी है मोदी सरकार के कामकाज की। नोटबंदी से लेकर जीएसटी जैसे मुद्दे, पेट्रोल–डीजल की लगातार बढ़ती कीमतों को भी परे रखें, तो भी केंद्र सरकार के खिलाफ हिंदी पट्टी में एक आक्रोश उभरता हुआ दिख ही रहा था।

बीजेपी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तिगत करिश्मे के सहारे चुनाव दर चुनाव जीत रही थी, लेकिन अभी जीत का सिलसिला अचानक टूट जाना यह बताता है कि मोदी का करिश्मा चल नहीं पा रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को न सिर्फ एकजुट विपक्ष की ओर से बड़ा चौलेंज मिलेगा, बल्कि उन्हें अपनी पार्टी के भीतर से भी चुनौती मिल सकती है। पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी ने पिछले एक वर्ष में लगातार अपने को किसानों, आदिवासियों, दलितों और युवाओं के मुद्दे पर फोकस किया और केंद्र सरकार की नाकामियों की ओर जनता का ध्यान खींचा। पार्टी अध्यक्ष बनने के बाद से राहुल गांधी प्रधानमंत्री मोदी को सीधी चुनौती देते रहे हैं। उन्होंने नोटबंदी और राफेल से लेकर बैंकों को हजारों करोड़ का चूना लगाने वाले उद्योगपतियों तक के सवाल ढंग से उठाए। संयोग ही है कि नतीजों के दिन कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का बतौर पार्टी अध्यक्ष एक साल पूरा हुआ है। कांग्रेस के पक्ष में आए जनादेश को भविष्य के नेता के रूप में राहुल गांधी की स्वीकृति की तरह भी देखा जाएगा। कांग्रेस के साथ कभी हां कभी ना के रिश्ते में जुड़े क्षेत्रीय दलों में भी राहुल गांधी के नेतृत्व से जुड़े संशय कुछ कम हो सकते हैं।

जनता अब स्थानीय मुद्दों को ज्यादा तवज्जो दे रही है। सबसे बड़ी बात यह कि हिंदीभाषी राज्यों में उसे कांग्रेस में उम्मीद नजर आ रही है। हिंदीभाषी इलाके में जनता ने केंद्र और राज्य सरकारों के कामकाज के प्रति नाराजगी दिखाई है। कहा जा सकता है कि कांग्रेस की वापसी हो रही है। केंद्र और राज्य सरकारों ने काम करने के जो भी दावे किए, वे जमीनी स्तर पर हवाई साबित हुए। उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में बीजेपी जिस हिंदुत्व के मुद्दे को उभार कर देशव्यापी माहौल बनाने में जुटी थी, उसका कुछ खास असर चुनावी राज्यों पर नहीं पड़ा। किसानों के सवाल, ना. जवानों, दलितों–आदिवासियों के सवाल ज्यादा प्रभावी रहे।

कुल मिलाकर अभी तक के रुझानों में बीजेपी के लिए झटका है। देखने वाली बात यह है कि लोकसभा चुनाव से कुछ महीने पहले आए इन चुनाव परिणामों का देश की राजनीति पर क्या असर पड़ता है। क्या पीएम मोदी अर्थव्यवस्था को लेकर कोई बड़ा फैसला करेंगे और इसके साथ ही अब वह क्या रणनीति अपनाएंगे। पांच राज्यों के परिणामों से स्पष्ट है कि अब माहौल उसके खिलाफ हो रहा है। भावनात्मक मुद्दों की हवा निकलना इन नतीजों का दूसरा संदेश है।

क्या राम मंदिर या बाबरी मस्जिद बनने से हिंदुस्तान की दरिद्रता दूर हो जायेगी ?

-राजकुमार झांझरी

देश के नामी पत्रकार, बुद्धिजीवी होने के नाते श्रीमान वेदप्रताप वैदिकजी के प्रति मेरे मन में काफी सम्मान की भावना होने के बावजूद दिनांक-30 अक्टूबर 2018 को लोकमत समाचार में राम मंदिर का अध्यादेश कैसा हो? शीर्षक उनका लेख पढ़कर मुझे उनकी बुद्धि पर खासा तरस आया। आपने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा- मैं कहता हूँ कि वहां दुनिया के लगभग सभी प्रमुख धर्मो के तीर्थ क्यों न बनें? यह विश्व सभ्यता को भारत की अभूतपूर्व देन होगी। अयोध्या विश्व पर्यटन का आध्यात्मिक केंद्र बन जायेगी।

मेरी यह समझ में नहीं आता कि जिस हिंदुस्तान में विश्व में सबसे ज्यादा मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर व अन्य धर्मस्थल तथा पंडे, मौलवी, पादरी, धर्मगुरु हैं, वह दुनिया का सबसे दरिद्र देश क्यों है ? अगर मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारों व अन्य जितने भी धर्मस्थल हैं, उनमें पूजा–पाठ, नमाज, बलि, कुर्बानी, प्रार्थना, यज्ञ करने से ही मनुष्य का कल्याण होता तो फिर आज हिंदुस्तान विश्व का सबसे बड़ा, सुखी, समृद्धिशाली व ताकतवर देश होता, न कि दरिद्रतम देश। फिर भी भारतवर्ष के लोग मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर के नाम पर इतने उन्माद क्यों हैं? राम मंदिर बनने या बाबरी मस्जिद बनने से ही हिंदुस्तान का कायाकल्प होता तो इनके निर्माण में किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, लेकिन जो हिंदुस्तान करोड़ों मंदिरों, मस्जिदों, गिर्जाघरों, गुरुद्वारों के होते हुए भी सैकड़ों वर्षों तक विदेशी शासकों का गुलाम रहा है, जिसकी आधी से ज्यादा आबादी आज भी भूखे पेट सोने को अभिशप्त है, उस हिंदुस्तान में राम मंदिर या बाबरी मस्जिद को लेकर इतना उन्माद, इतना हाहाकार क्यों? क्या वे इस बात की गारंटी ले सकते हैं कि अयोध्या में राम मंदिर या बाबरी मस्जिद बनने से हिंदुस्तान की दरिद्रता दूर हो जायेगी, हिंदुस्तान का कायाकल्प हो जायेगा? अगर नहीं तो फिर राम मंदिर–बाबरी मस्जिद के निर्माण को लेकर इतना हो–हल्ला क्यों? आम आदमी की बात और है, आप सरीखे विद्वान, बुद्धिमान लोग अगर बेसिर–पैर की बातें लिखकर समाज को गुमराह करते हैं तो फिर पत्रकारिता की वृत्ति के प्रति कोफ्त पैदा होने लगती है।

दुनिया में जितने मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारे व अन्य धर्मस्थल हैं, उनकी संपदा को बेचकर अगर उन्हें मानव कल्याण के कार्य पर खर्च कर दिया जाये तो मैं समझता हूँ कि दुनिया में एक भी दरिद्र, भूखा नहीं रहेगा और दुनिया में अपराध भी न्यूनतम हो जायेंगे। मानव जाति को धर्म तथा धर्मगुरुओं के शिकंजे से आजाद करना वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है, न कि राम मंदिर या बाबरी मस्जिद का निर्माण।

मनुष्य के दो सबसे बड़े शत्रु हैं– पहला लोभ और दूसरा भय। सृष्टि के प्रारंभ से ही मुट्ठी भर चालाक, धुरंधर, शैतान, लालची स्वभाव के लोग मनुष्य की इन दो कमजोर नब्जों के जरिये मानव जाति का शोषण करते आ रहे हैं। मनुष्य जाति के शोषण का सबसे भयंकरतम माध्यम है धर्म। सृष्टि ने हमें हिंदु, मु. सलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध के रूप में नहीं बल्कि मनुष्य के रूप में जन्म दिया है। लेकिन मानवता के दुश्मनों ने हिंदु, मु. सलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि हजारों धर्मों की सृष्टि कर मानव जाति के टुकड़े–टुकड़े कर दिये हैं और आज समूची मानव जाति धर्म रूपी हैवानियत के शिकंजे में लहुलुहान हो रही है।

धरती हमारी माता है और हम उसकी संतान हैं। मनुष्य धरती की छाती से उत्पन्न जल, अन्न तथा उसके वायुमंडल से ऑक्सीजन ग्रहण कर जीवन धारण करता है, लेकिन अपने क्षुद्र स्वार्थों की खातिर उसी धरती माता को विध्वस्त करने पर तुला हुआ है। हर मां की यह कामना होती है कि उसकी संतान सुख, शांति, समृद्धि से रहे तथा उसके जीवन में कभी कोई आपत्ति–विपत्ति न आये। हमारी धरती माता का भी सिस्टम इस प्रकार बना है कि अगर मनुष्य सृष्टि (वास्तु) के नियमों के अनुसार गृह निर्माण करे और सृष्टि द्वारा प्रदत्त मन की शक्ति का उपयोग करे तो उसे न सिर्फ जीवन भर सुख, शांति, समृद्धि हासिल होती है बल्कि उसे किसी प्रकार की अनहोनी का शिकार भी नहीं होना पड़ता।

अफसोस इस बात का है कि चंद क्षुद्र स्वार्थी लोग मानव जाति को इस सत्य से विमुख कर स्वरचित धर्मों और गुरुओं की सेवा–साधना करने से उन्नति होने की झूठी दिलासा और उनकी अवहेलना करने पर नरक, दोखज में जाने का भय दिखाकर न सिर्फ उसका शोषण करते आये हैं, बल्कि उन्होंने समूची मानव जाति को पंगु बनाकर रख दिया है। दुनिया का हर धर्म यही कहता है कि तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं, सभी कुछ ऊपरवाला अल्ला, गॉड, भगवान करता है, जबकि हकीकत यह है कि दुनिया में भगवान, अल्ला, गॉड नाम की कोई चीज नहीं है। कबीर ने कहा था– पाथर पूजै हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़। असली भगवान, गॉड, अल्ला प्रकृति प्रदत्त शक्ति के रूप में खुद मनुष्य के मन में हैं, लेकिन दुनिया के सभी धर्मगुरु प्रकृति प्रदत्त शक्ति को झुठला कर अस्तित्वहीन भगवान, अल्ला, गॉड पर विश्वास करने की सलाह देकर समूची मानव जाति को दिग्भ्रमित करते आये हैं। यह बात किसी से छुपी नहीं है कि दुनिया में धर्म के नाम पर ही सबसे ज्यादा अपराध, हिंसा, आतंकवाद व विद्वेष फैलाने सरीखी अमानवीय घटनाएं संघटित होती आई हैं।

दुनिया में जितने मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारे व अन्य धर्मस्थल हैं, उनकी संपदा को बेचकर अगर उन्हें मानव कल्याण के कार्य पर खर्च कर दिया जाये तो मैं समझता हूँ कि दुनिया में एक भी दरिद्र, भूखा नहीं रहेगा और दुनिया में अपराध भी न्यूनतम हो जायेंगे। मानव

जाति को धर्म तथा धर्मगुरुओं के शिकंजे से आजाद करना वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है, न कि राम मंदिर या बाबरी मस्जिद का निर्माण।

सृष्टि ने मनुष्य के मन में इतनी शक्ति प्रदान की है कि दुनिया का कोई भी काम उसके लिए असंभव नहीं। वास्तु के नियमानुसार गृह निर्माण करने तथा मन की शक्ति का उपयोग करने से उसे जीवन में अकल्पनीय सुकून, शांति तथा प्रगति की प्राप्ति होती है। जबकि मनुष्य द्वारा सृजित भगवान, अल्ला, गॉड और मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरों का मनुष्य के जीवन में कोई प्रभाव नहीं होता। सृष्टि की सत्ता की अनदेखी कर युग–युग से धर्म और क्षुद्रस्वार्थी धर्मगुरुओं की अंध भक्ति करने की वजह से आज हिंदुस्तान की जनता दरिद्रता का जीवन बसर करने को अभिशप्त है। अस्तित्वहीन अल्ला, भगवान, गॉड की प्रार्थना, पूजा, इबादत में अपना जीवन होम करने वालों को शून्यता के अलावा और भला क्या हासिल होने वाला है ? इसलिए आज मुट्ठी भर लोगों के पास संसार की अधिकांश संपदा एकत्रित हो गई है, जबकि अधिकांश लोगों को दरिद्रता का जीवन बसर करना पड़ रहा है।

देश के पूर्वोत्तर के लोग भी सदियों से प्रकृति के नियमों के विप. रीत गृह निर्माण करते आये हैं, जिसकी वजह से यह क्षेत्र युगों से युद्ध, आतंकवाद व नकारात्मक सोच से त्राहिमाम करता रहा है। पूवा. र्त्तर क्षेत्र को हिंसा, उग्रवाद, पिछड़ेपन व अंधविश्वास से मुक्त कर इलाके की जनता का जीवन स्तर सुधारने के लिए हम विगत 23 सालों से लोगों को घर–घर जाकर प्रकृति (वास्तु) के नियमानुसार गृह निर्माण व मन शक्ति के प्रयोग की सलाह देने की मुहिम में जुटे हुए हैं और अब तक 16,000 परिवारों को निरूशुल्क वास्तु सलाह दे चुके हैं। हमने कई स्कूल, कॉलेजों, मंदिरों का भी वास्तु दोष दूर करवाया है, जिसके बाद इनकी काफी उन्नति हुई है। अगर हिंदुस्तान के लोग धर्म के नाम पर जारी ढोंग से खुद को मुक्त कर मन की शक्ति का प्रयोग और सृष्टि (वास्तु) के नियमानुसार गृह निर्माण करने लगें तो फिर वो दिन दूर नहीं होगा, जब हिंदुस्तान विश्व का सबसे सुखी, समृद्ध व शांतिपूर्ण देश बन जायेगा। आप सरीखे बुद्धिजीवी ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन व आंकलन कर धर्म की अवास्तविकता से देश की जनता को अवगत करायें, तभी आपकी पत्रकारिता की सार्थकता होगी।

–(यह लेखक के निजी विचार है)

राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है हत्यारों को प्रोत्साहन

तनवीर जाफरी

राम राज्य के खोखले दावों के बीच देश में लगभग चारों ओर गुंडाराज का चलन बढ़ता जा रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इस समय देश के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे नरेंद्र मोदी तथा देश के सबसे बड़े प्रांत उत्तर प्रदेश के सत्ता प्रमुख योगी आदित्यनाथ दोनों ही व्यक्ति स्वयं को फकीर व संत कहलवाने से खूब गदगद् होते हैं। प्रायरू इन नेताओं से कुछ विशेष पत्रकार इनकी फकीरी व इनके संत स्वभाव के बारे में भी बातें करते देखे जाते हैं। बड़ा अजीब सा लगता है जब यही स्वयंभू संत सांप्रदायिक भीड़ द्वारा की जाने वाली किसी हत्या पर खामोश हो जाते हैं। प्रसिद्ध शायर खुमार बा. राबंकवी ने फरमाया है कि–अरे ओ जफाओं पे चुप रहने वालो। ख़ामोशी जफाओं की ताईद है।। गोया यदि जुल्मों–सितम,अत्याचार के विरुद्ध आप अपनी आवाज बुलंद नहीं करते तो गोया आप उस अत्याचार व अन्याय का समर्थन कर रहे हैं। हालांकि शायर ने यह विचार आम लोगों के लिए व्यक्त किए हैं जबकि सत्ता के ज़िम्मेदारों पर तो यह बात और भी जोरदार तरीके से लागू होती है। हत्यारी भीड़ द्वारा लोगों की हत्याओं का सिलसिला अब यहां तक आ पहुंच चुका है कि नरेंद्र मोदी के शासनकाल में चार वर्षों में अब तक लगभग 136 ऐसे मामले सामने आ चुके हैं जिसमें भीड़ द्वारा किसी निहत्थे, बेगुनाह अथवा किसी बुजुर्ग व्यक्ति की हत्या कर दी गई हो । बावजूद इसके कि इस प्रकार के हमले अधिकांशतरू मुस्लिम समाज के लोगों पर किए गए हैं। परंतु हत्यारों की इस भीड़ ने हिंदू–समाज के लोगों को भी नहीं बक्शा है।

इसका ताजा–तरीन उदाहरण पिछले दिनों बुलंद शहर में दंगाई भीड़ द्वारा एक दबंग व ईमानदार पुलिस निरीक्षक सुबोध कुमार सिंह की गोली मार कर हत्या किया जाना है। दंगाई सांप्रदायिक भीड़ के बुलंद हौसलों का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि इसी भीड़ ने न केवल इंस्पेक्टर सुबोध सिंह की हत्या की बल्कि उनकी जीप को भी आग के हवाले कर दिया। यहां तक कि उस पुलिस चौकी को भी आग लगा दी जहां हिंसक भीड़ प्रदर्शन कर रही थी। इस घटना से जुड़े कुछ पहलू ऐसे हैं जो हत्यारों के प्रति सत्ता के रुख का साफ पता देते हैं। जैसे घटना के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह के परिजनों से मिलने व उन्हें सांत्वना देने हेतु उनके घर जाने के बजाए शहीद की विधवा व परिवार को लखनऊ बुलाया गया और उनकी सभी मांगों को स्वीकार करने व सांत्वना धनराशि आदि घोषित करने का पुनीत कायर किया गया। घटना के बाद सरकार द्वारा जारी बयान में हत्यारों को पकडने या उन्हें सख्त सजा देने जैसा कोई संदेश देने के बजाए कथित गौ हत्या के संबंध में सख्त कार्रवाई करने के आदेश दिए गए। और इस आदेश पर अमल करते हुए पुलिस ने अपने अधिकारी के हत्यारों को तलाशने के बजाए गौहत्या के आरोपियों की धरपकड़ तेज कर दी। यहां तक कि चौकस पुलिस द्वारा गौहत्या के आरोप में 12 वर्ष के दो बच्चों को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

इसी तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि इतनी बड़ी घटना के बाद बुलंद शहर के पुलिस अधीक्षक सहित तीन पुलिस

अधिकारियों को बुलंद शहर से स्थानांरित कर दिया गया। एसएसपी के स्थानांतरण के बाद बुलंदशहर के भाजपा विधायक देवंद्र लोधी अपने समर्थकों के साथ विजय जुलूस के रूप में शहर में घूमते व जश्न मनाते दिखाई दिए। इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह के हत्या के मात्र एक सप्ताह के भीतर ही अपने गले में फूलों व नोटों की माला डाले एक–दूसरे को मिठाईयां खाते–खिलाते स्थानीय भाजपा विधायक देवेंद्र लोधी अपने इस भौंडे प्रदर्शन से आखिर क्या संदेश देना चाह रहे थे? गौर करने की बात है कि जिस शहर में एक ज़ि मेदार वरिष्ठ पुलिस अधिकारी व एक अन्य नवयुवक की हत्या हुई हो वहां का सत्ताधारी दल का विधायक आखिर किस बात का जश्न मनाता फिर रहा है? दूसरी ओर यही विधायक अपने एक टीवी साक्षात्कार में यह कहने का साहस भी नहीं जुटा पाता कि इंस्पेक्टर के हत्यारों को गिरफ्तार कर उन्हें सख्त सजा दी जानी चाहिए जबकि आरोपी हत्यारे का नाम प्रा. थमिकी में दर्ज हो चुका है।

दरअसल सामूहिक रूप से भीड़ द्वारा सुनियोजित तरीके से हत्या किए जाने के चलन को सत्ता द्वारा खुले तौर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा इसे सत्ता का संरक्षण हासिल है। अन्यथा जयंत सिन्हा जैसा केंद्रीय मंत्री जिसने हॉवर्ड बिजनेस स्कूल से एमबीए की शिक्षा ग्रहण की हो उस जैसे शिक्षित व्यक्ति द्वारा झारखंड में हत्यारी भीड़ के उन आठ सरगना हत्यारों का उनके गले में माला डाल स्वागत न किया जाता जिन्होंने भीड़ के साथ शामिल होकर 55 वर्षीय अलीमुदीन अंसारी की झारखंड के रामगढ़ कस्बे में हत्या कर दी थी। इसी प्रकार दादरी में मोह मद अखलाक के हत्यारों को केंद्रीय मंत्री द्वारा स मानित किया गया तथा इनमें से पंद्रह हत्यारों को एक भाजपा विधायक की सिफारिश पर कथित रूप से संविदा पर नौकरी भी दी गई। इसी प्रकार राजस्थान के राजसमंद में या रकबर खान या पहलू खान आदि जैसे अनेक लोगों के हत्यारों के पक्ष में भीड़ तंत्र का खड़ा हो जाना और हत्यारों को सत्ता के संरक्षण में बेखौफ होकर उनकी मदद करना व उनके समर्थन में नारे लगाना यहां तक कि जरूरत पडने पर प्रशासन व न्यायपालिका से टकराने का भी साहस दिखाना यह सब निश्चित रूप से एक सोची–समझी हुई दूरगामी साज़िश का ही नतीजा है।

हत्यारों को महिमामंडित करने का इससे बड़ा दुर्भाग्यशाली प्रदर्शन आखिर और क्या हो सकता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भग. वान राम कि रामनवमी पर निकाली जाने वाली पावन शोभा यात्रा में जोधपुर में इसी वर्ष एक ऐसी झांकी निकाली गई थी जिसपर एक व्यक्ति को राजसमंद के हत्यारे शंभू रैगर की वेषभूषा में शाही कुर्सी पर बिठाकर उसका महिमामंडन किया जा रहा था। यह झांकी बेरोक–टोक प्रशासन की नाक के नीचे पूरे शहर में घूमी और जनता द्वारा इसका जय–जयकार किया गया। अब भले ही यह आयोजन किसी विशेष विचारधारा के कुछ लोगों द्वारा क्यों न किया गया हो परंतु आम जनता ने राजस्थान में भीड़तंत्र द्वारा किए जाने वाले इस प्रकार के घृणित अपराधों को किस रूप में लिया है इसका जवाब निश्चित रूप से राजस्थान की जनता ने अपने मतों के द्वारा स्पष्ट कर दिया है। हत्यारों के महिमामंडन का सबसे भयानक रूप उस समय भी देखने को मिला था जब कठुआ में एक आठ वर्षीय बालिका के बलात्कारियों व हत्यारों के समर्थन में भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं की एक भीड़ सड़कों पर उतर आई। इस भीड़ में भाजपा के मंत्रीगण भी शामिल थे।

दरअसल अपराध अथवा अपराधियों को धर्म व संप्रदाय के चश्मे से देखना सबसे खतरनाक है। परंतु आज धर्म के नाम पर अपराधियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। बेरोजगार व गुमराह नवयुवक धर्मांधता का शिकार बन सत्ता के चक्रव्यूह में उलझकर अपना जीवन व भविष्य बरबाद कर रहे हैं। दूसरी ओर देश की राष्ट्रीय एकता अखंडता एवं हमारे सामाजिक सद्भाव को बिगाडने की कोशिश में लगे चंद नेता स्वयं को सबसे बड़ा धर्मरक्षक व राष्ट्ररक्षक बता कर गरीब जनता के पैसों पर ऐश करने का षड्यंत्र रच रहे हैं। और इसी खेल की आड़ में देश के चंद गिने–चुने उद्योगपति घरानों की जेबें बेतहाशा भरी जा रही हैं। राष्ट्र व जनता से जुड़े वास्तविक मुद्दे नक्कारख़ाने में तूती की आवाज की तरह गायब होते जा रहे हैं। ऐसे में हमें अपनी आंखें खोलने तथा अपने व राष्ट्र के अस्तित्व को सुरक्षित रखने हेतु यथाशीघ्र कदम उठाने की जरूरत है।

उन चिरागों को बुझा दो तो उजाला होगा !

– निर्मल रानी

उत्तर प्रदेश के बुलंद शहर में पिछले दिनों गौमांस की अफवाह को लेकर फैली हिंसा में एक जांबाज व कर्मठ पुलिस अधिकारी सुबोध कुमार सिंह की उग्र भीड़ ने हत्या कर दी। पुलिस व उग्र भीड़ के मध्य हुए संघर्ष में भारतीय जनता पार्टी के एक कार्यकर्ता की भी हत्या हो गई। इस संबंध में सभी राजनैतिक दल अपने–अपने राजनैतिक फायदे व नुकसान के मद्देनजर बयानबाज़ियां करने में व्यस्त हैं। परंतु इस पूरे घटनाक्रम के आस–पास की दो महत्वपूर्ण घटनाएं ऐसी जरूर हैं जिनका ज़िक्र करना यहां बेहद जरूरी है।

पहली घटना बुलंदशहर ज़िले में ही चिंगरावटी पुलिस चौकी जहां हिंसक प्रदर्शन हुए व पुलिस चौकी को आग लगा दी गई एवं संघर्ष के दौरान चौकी प्रभारी निरीक्षक सुबोध कुमार सिंह को गोली मारी गई यहां तक कि उनकी लाईसेंसी पिस्टल व उनके तीन मोबा. ईल फोन छीन कर गुंडे भाग खड़े हुए। उसी स्थान से लगभग 50 किलोमीटर दूर 1 से 3 दिसंबर तक मुस्लिम समुदाय द्वारा आयोजित किया गया तीन दिवसीय इज्तिमा अथवा समागम जिसमें कि लाखों मुसलमान इकट्ठा थे, आखिर उसी क्षेत्र में कथित गौरक्षकों द्वारा हिंसक प्रदर्शन क्यों किया गया? दूसरी बात यह कि अभी बुलंदशहर की घटना से ठीक पहले दिल्ली में एक व दो दिंसबर को देश के लगभग दो सौ से अधिक किसान संगठनों द्वारा बुलाए गए किसान प्रदर्शन में हजारों किसानों ने हिस्सा लिया। यहां तक कि देश के 21 राजनै. तिक दलों का भी उन्हें समर्थन हासिल था। परंतु किसी स्वयंभू देशभक्त मीडिया ने न तो उन किसानों की मांगों की ओर तवज्जो दी न ही किसानों की समस्याएं किसी स्वयंभू राष्ट्रवादी संगठन अथवा नेता के गले उतरी।

गोया बुलंदशहर की घटना के आस–पास की इन दो घटनाओं से साफ जाहिर है कि इस समय सत्ता के संरक्षण में पल रहे टीवी चौनल्स अथवा असामाजिक तत्वों के लिए किसानों की समस्याओं के पक्ष में खड़े होना,गौपालक किसानों के भविष्य की चिंता करना,पशुधन के वास्तविक वारिसों की बदहाली पर आंसू बहाना, देश में प्रत्येक वर्ष हो रही किसानों की आत्महत्याओं को रोकने का प्रयास करना अथवा इनपर आंसू बहाना इतना जरूरी नहीं है जितना कि हिंदू–मुस्लिम समाज के मध्य दरार पैदा करना, धर्म व संप्रदाय के नाम पर देश को संघर्ष की आग में झोंकना तथा स्वयं को झूठा गौरक्षक बताकर इसी बहाने अपनी रोजी–रोटी चलाने का प्रयास करना। बड़े आश्चर्य की बात है कि बुलंदशहर में जिस स्थान पर मुस्लिम समाज का विशाल समागम शांतिपूर्ण तरीके से हो रहा था वहां उस स्थल के चारों ओर के हिंदू बाहूल्य गांवों के लोग उस समागम में तन–मन–धन से अपनी सेवाएं दे रहे थे।

बताया जाता है कि इस समागम में मुस्लिम उलेमाओं द्वारा देश में अमन–शांति,समाज में प्रेम, सद्भाव व भाईचारा बनाए रखने की दुआएं मांगी गईं तथा आतंकवाद के विरुद्ध भी स्वर बुलंद किए गए। गोया इस समागम में ऐसा कुछ भी नहीं था जो राष्ट्रविरोधी हो या जिससे किसी दूसरे धर्म व समुदाय की भावनाएं आहत हों। इसके

बावजूद इस समागम स्थल के मात्र 50 किलोमीटर दूर गौमांस की अफवाह को लेकर इतना बड़ा हिंसक प्रदर्शन होना तथा इसमें एक इंस्पेक्टर सहित दो लोगों को हत्या हो जाना अपने–आप में ढेर सारे सवाल खड़े करता है?

अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण विषय यह भी है कि जहां इस समय देश के कई प्रमुख टीवी चौनल सत्ता का गुणगान करने तथा सत्ताधारियों के लाभ–हानि के मद्देनजर समाचार प्रसारित करने व समाज को तोडने वाली बहसें प्रसारित करने में व्यस्त हैं वहीं इन्हीं टी वी चौनल्स में प्रतिस्पर्धा करते हुए एक नाममात्र चौनल ऐसा भी है जिसका स्वामी स्वयं खांटी हिंदुत्व की पताका लेकर घूमता रहता है तथा इसका काम हिंदू समाज के लोगों को मुस्लिम समुदाय के विरुद्ध उकसाना व भड़काना रहता है। इस टीवी चौनल ने बुलंदशहर के हिंसक प्रदर्शन के पीछे घटनास्थल से 40–50 किलोमीटर की दूरी पर हो रहे मुस्लिम समागम का हाथ बताया।

जरा सोचिए यदि लाखों निहत्थे मुसलमानों के समागम के साथ कोई धार्मिक संघर्ष की स्थिति इस अफवाह के चलते बन जाती तो कितनी भयावह घटना घट सकती थी। परंतु टीवी चौनल द्वारा फैलाई जा रही इस अफवाह के बाद बुलंदशहर पुलिस द्वारा तत्काल एक ट्वीट के द्वारा कहा गया कि–कृपया भ्रामक खबर न फैलाएं। इस घटना का इज्तिमा कार्यक्रम से कोई संबंध नहीं है। इज्तिमा सकुशल संपन्न समाप्त हुआ है। उपरोक्त घटना इज्तिमा स्थल से 45–50 किलोमीटर थाना स्याना क्षेत्र में घटित हुई है जिसमें कुछ उपद्रवियों द्वारा घटना कारित की गई है। इस संबंध में वैधानिक कार्रवाई की जा रही है। पुलिस द्वारा इस प्रकार की अफवाह पर तत्काल संज्ञान लेने के बाद इस फर्जी टीवी चौनल को अपने नापाक मकसद में कोई सफलता नहीं मिल सकी।

एक ओर तो देश का अन्नदाता व गौपालक किसान देश में आत्महत्याएं करने पर मजबूर है जिसकी न तो सत्ताधीशों द्वारा सुनवाई की जा रही है न ही स्वयंभू चौथे स्तंभ के मु य धारा के टीवी चौनल्स अथवा समाचार पत्र उनकी समस्याओं व मांगों को यथोचित रूप से प्रसा. रित कर रहे हैं। तो दूसरी ओर अनेक ऐसी बातें जिनका न तो देश के विकास से कोई लेना–देना है न ही समाज कल्याण से जुड़ी हैं। बजाए इसके देश को तोडने व धार्मिक दुर्भावनाएं फैलाने वाली हैं,ऐसी बातों का पूरे जोर–शोर से प्रचार किया जा रहा है। जबकि यदि गौसंरक्षण के विषय को ही ले लें तो इसकी भी वास्तविक तस्वीर बेहद भयावह है। गौरक्षा का ढोंग करने वाली तथा गाय के नाम पर हिंदू समाज को उकसाने वाली मोदी सरकार के राज में बीफ निर्यात में बेतहाशा वृद्धि हुई है।

देश में बीफ निर्यातक कंपनियों के अधिकतर स्वामी हिंदू समुदाय से ही संबंधित हैं। आज पूरे देश में गौपालक बछड़े का जन्म होते ही उसे धक्का देकर सड़कों पर भगा देते हैं। पूरे देश में गली–कूचे,राज्य तथा राष्ट्रीय राजमार्ग पर सांडों व बछड़ों के झुंड दिखाई देते हैं। आए दिन दुर्घटनाओं की सं या इन्हीं आवारा पशुओं के कारण बढ़ी जा रही है। कथित गौरक्षकों के भय से कोई किसान अपनी गाय या बछड़ा किन्हीं भी परिस्थितियों में क्रय–विक्रय नहीं कर पा रहा है न ही इसकी आवा. जाही हो पा रही है। जहां भी जाईए वहीं कूड़े–करकट के ढेर में गौवंश गंदगी में मुंह मारता यहां तक प्लास्टिक व पॉलीथिन खाता दिखाई दे जाएगा। देश में जगह–जगह घायल व बीमार गौवंश घूमता दिखाई देता है। परंतु इन सभी सच्चाईयों से मुंह फेरकर ले–देकर गाय के विषय को केवल मुसलमानों से ही जोड़कर देखने की कोशिश की जा रही है। और धर्मांधता में डूबे बेरोजगार युवा अपनी रोजी–रोटी नौकरी तथा व्यवसाय जैसी जीवन की जरूरतों के विषय में सोचने के बजाए भावनाओं में बहकर चंद मुठ्ठीभर नेताओं की सोची–समझी साज़िश का शिकार हो रहे हैं।

इस बीच मृतक शहीद इंस्पेक्टर सुबोध सिंह के बेटे अभिषेक ने भावुक होकर एक चुभता हुआ सवाल समाज से पूछा है कि–आज मेरे पिता ने हिंदू–मुसलमान विवाद में जान गंवा दी। कल किसके पिता जान गंवाने को मजबूर होंगे? राहत इंदौरी भी अपनी एक गजल के एक शेर में कह चुके हैं कि–लगेगी आग तो आएंगे घर कई जद में,यहां पे सिर्फ हमारा मकान थोड़ी है? निश्चित रूप से अफवाह तथा विद्वेष फैलाने की साज़िशों को बेनकाब करने व इन्हें नाकाम करने की जरूरत है। वास्तविक समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए ही भावनात्मक विषयों का सहारा लिया जाता है। इसी लिए शायर ने कहा कि–जिन चिरागों से तअस्सुअब का धुंआ उठता हो, उन चिरा+गों को बुझा दो तो उजाला होगा।

खेती के लिए किसानों को ऋण लेना ही नहीं पड़े, ऐसी स्थिति बनाइये

चाहे सत्ता में कोई भी दल रहे मगर किसानों के लिए कोई भी दल गंभीर नहीं है। 2022 तक किसान की आमदनी को दो गुना करने के अपने सपने को साझा करते हैं। इस पर किसानों का कहना है कि ये नेता सिर्फ घड़ियाली आंसू बहाते हैं। ना पिछली यूपीए सरकार गंभीर थी और ना ही वर्तमान मोदी सरक. ार। यानी किसान अब सच्चाई समझने लगे हैं और शायद बड़े सपने देखने से कतराने भी लगे हैं। किसानों की आत्महत्या किसी भी समाज के लिए एक बेहद शर्मनाक स्थिति है।

–रमेश सर्राफ धमौरा

हाल ही में सम्पन्न हुये पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस हिन्दी भाषी क्षेत्र के तीन महत्वपूर्ण राज्य मध्य प्रदेश, राजस्थान व छत्तीसगढ़ में अपनी सरकार बनाने में कामयाब रही है। कांग्रेस की कामयाबी का मुख्य कारण कांग्रेस द्वारा किसानों के कर्ज माफ करने की घोषणा को माना जा रहा है। देश में किसान आये दिन आत्महत्या कर अपनी जान गंवा रहा है जिसका मुख्य कारण उनका कर्जदार होना है। देश के सभी क्षेत्रों के किसान आज कर्ज के बोझ से दबे हुये हैं। किसानों को उनकी उपज का सही दाम नहीं मिलना, प्राकृतिक कारणों से किसानों की फसल खराब हो जाना, खराब हुयी फसल का बीमा कम्पनियों द्वारा समुचित मुआवजा नहीं दिया जाना, किसानों को मिलने वाला बीज, खाद का नकली होने कुछ ऐसे कारण रहे हैं जिन्होंने किसानों को लगातार कर्जदार बनाये रखा है।

देश का किसान अपनी फसल उपजाने के लिये मेहनत करने में कोई कमी नहीं छोड़ता है मगर उसके उपरान्त भी उसकी माली हालत कभी सुधर नहीं पाती है। कर्ज से परेशान होकर किसानों का आत्महत्या करना देश, प्रदेश की सरकारों पर कलंक है। जिस देश में किसान आत्महत्या करने को मजबूर होते हों वहां की सरकारों को शासन करने का हक नहीं होना चाहिये। लेकिन किसानों की आत्महत्या की घटनाओं से आंखें मूंदे बैठी सरकारों की सेहत पर कोई असर नहीं होता है। देश की सरकार ऐसा कोई समुचित उपाय कर पाने में नाकाम रही है जिससे किसानों की बढ़ती आत्महत्याओं की घटनाओं को रोका जा सके। देश में राजनीतिक दलों ने सत्ता पाने का एक शॉर्टकट रास्ता खोज लिया है। जब भी चुनाव आये किसानों को उनके ऋण माफी की घोषणा करक उनके वोट लेकर चुनाव जीत जाओ। पिछले कुछ वर्षों से यही देखने को मिल रहा है। 2014 में भाजपा ने किसानों की आय दोगुनी करने का वादा कर केन्द्र की सत्ता हासिल की थी तो कांग्रेस ने पंजाब व कर्नाटक का चुनाव भी कर्ज माफी के नाम पर ही जीता था। सरकार बनने पर कुछ किसानों का थोड़ा बहुत ऋण माफ कर उनको उनके पूर्ववर्ती हाल पर छोड़ दिया जाता हैं। धीरे–धीरे किसान पुनरू बैंकों से ऋण लेकर ऋणी हो कर पूर्ववत स्थिति में आ जाता है। ऐसे में सरकार किसानों की बार–बार कर्ज माफ करने के स्थान पर ऐसा कोई अन्य उपाय क्यों नहीं करती जिससे किसानों को बार–बार कर्जदार ना होना पड़े। देश के कई प्रदेशों में किसान आन्दोलन की सुगबुगाहट इस बात का द्योतक है कि देश के किसानों में अपनी लगातार बिगड़ती जा रही आर्थिक दशा को लेकर अन्दर ही अन्दर भयंकर आक्रोश व्याप्त हो रहा है। हाल ही में तीन राज्यों में सरकार बनाने वाली कांग्रेस पार्टी के लोन माफी के वादे के उपरान्त गत एक सप्ताह में राजस्थान में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद कर्ज से परेशान राजसंद, झालावाड, श्रीगंगानगर, जोधपुर में चार किसानों ने आत्महत्या कर ली है। मध्य प्रदेश में दो किसानों ने आत्महत्या कर सरकार की ढुलमुल ऋण माफी नीति के मुंह पर करारा तमाचा मारा है। सरकारें घोषणा तो फटाफट कर देती हैं मगर उन पर अमल करते समय कानूनी–नियमों का ऐसा मकड़जाल बुना जाता है जिसमें अनपढ़ किसान फंस कर रह जाता है। कांग्रेस के गठबंधन से कर्नाटक में चल रही सरकार ने भी किसानों के ऋण माफी के बड़े–बड़े वादे किये थे मगर वहां सरकार बनने के बाद अब तक 250 किसानों ने कर्ज से परेशान होकर पिछले 6 महीने में आत्महत्या की है। हालांकि वहां के कृषि विभाग के सूत्रों का कहना है कि ये बता पाना मुश्किल है कि ये आत्महत्याएं कर्ज के कारण हुई हैं या किसी और कारण से, लेकिन असलियत तो ये है कि कांग्रेस और जेडी (एस) की सरकार किसानों की आत्महत्या रोक पाने में असमर्थ है।

एक समय पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने जय जवान, जय किसान का नारा दिया था। शास्त्री जी इस नारे के जरिये समाज में वह एक संदेश पहुंचाना चाहते थे कि किसान और जवान

देश की दशा और दिशा तय करते हैं, अगर ये नहीं होंगे तो देश की दुर्दशा हो जाएगी। जहां जवान देश की रक्षा करता है, वहीं किसान खेती के जरिये देश को अनाज देता है। अगर किसान नहीं होगा तो देश में अन्न के टोटे पड़ जायेंगे। आज हम जब जय किसान का नारा सुनते हैं तो कुछ अजीब–सा लगता है। आज किसान की जय नहीं बल्कि पराजय हो रही है। किसान भूखा और कमजोर हो रहा है। फसल बर्बाद होने की वजह से किसान आत्महत्या कर रहे हैं। कृषि और किसान भारतीय परम्परा के वाहक हैं। जब परम्परा मरती है तो देश मरता है। किसानों की खुशहाली से ही देश व सम्पूर्ण मानवता खुशहाल होगी। किसान खुशहाल नहीं होंगे तो देश को दुरूखी होने से कोई नहीं रोक पायेगा। हमारे देश में किसानों की आत्महत्या एक राष्ट्रीय समस्या का रूप धारण कर चुकी है। आये दिन देश के किसी ना किसी हिस्से से किसानों के आत्महत्या करने की खबरें मिलती रहती हैं। देश की प्रगति एवं विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के बाद भी किसानों को जिन्दगी से निराश होकर ऐसे कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यह निश्चित रूप से गंभीर चिंता का विषय है। देश में किसानों द्वारा आत्महत्या करने के मामलों में अप्रत्याशित तौर पर काफी वृद्धि हुई है।

भारतीय कृषि बहुत हद तक मानसून पर निर्भर है तथा मानसून की असफलता के कारण नकदी फसलें नष्ट होना किसानों द्वारा की गई आत्महत्याओं का मुख्य कारण माना जाता रहा है। मानसून की विफलता, सूखा, कीमतों में वृद्धि, ऋण का अत्यधिक बोझ आदि परिस्तिथियां समस्याओं के एक चक्र की शुरुआत करती हैं। बैंकों, महाजनों, बिचौलियों आदि के चक्र में फंसकर भारत के विभिन्न हिस्सों के किसानों ने आत्महत्याएं की हैं। भारत में किसान आत्महत्या 1990 के बाद पैदा हुई स्थिति है जिसमें प्रतिवर्ष दस हजार से अधिक किसानों के द्वारा आत्महत्या की रपटें दर्ज की गई हैं।

चाहे सत्ता में कोई भी दल रहे मगर किसानों के लिए कोई भी दल गंभीर नहीं है। 2022 तक किसान की आमदनी को दो गुना करने के अपने सपने को साझा करते हैं। इस पर किसानों का कहना है कि ये नेता सिर्फ घड़ियाली आंसू बहाते हैं। ना पिछली यूपीए सरकार गंभीर थी और ना ही वर्तमान मोदी सरकार। यानी किसान अब सच्चाई समझने लगे हैं और शायद बड़े सपने देखने से कतराने भी लगे हैं। किसानों की आत्महत्या किसी भी समाज के लिए एक बेहद शर्मनाक स्थिति है। आखिर वो कौन सी परिस्थितियां हो सकती हैं जिसकी वजह से किसान जो सबके लिए अनाज उपजाता है वो आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है। भारत में अभी हाल के दिनों में किसानों के आत्महत्या करने के आंकड़ों में वृद्धि दर्ज की गयी है जो वाकई चिंता का विषय है और इस ओर अगर वक्त रहते ध्यान नहीं दिया गया तो ये हालात और भी बिगड़ सकते हैं।

सरकार को किसानों की आत्महत्या जैसे ज्वलंत मुद्दे को

समझने और उन कारणों, जिनकी वजह से किसान इतना बड़ा कदम उठाने पर मजबूर हो जाते हैं, का समाधान सोचने की आवश्यकता है। भारत जैसे एक कृषि प्रधान देश में किसानों की आत्महत्या बेहद चिंताजनक स्थिति है। कृषि क्षेत्र में निरंतर मौत का तांडव दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों का नतीजा है। दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों के चलते कृषि धीरे–धीरे घाटे का सौदा बन गई है, जिसके कारण किसान कर्ज के दुष्चक्र में फंस गए हैं। पिछले एक दशक में कृषि ऋणग्रस्तता में 22 गुना बढ़ोतरी हुई है। अतरू सरकार को किसानों के लिये प्रभावी नीतियों का निर्माण करना होगा। सबसे बढ़कर इन नीतियों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना होगा। किसानों की स्थिति बेहतर बनाने और उन्हें आत्महत्या करने से रोका नहीं गया तो यह स्थिति और भी भयावह रूप धारण कर सकती है। उनके लिए फसल बीमा, फसलों का उच्च समर्थन मूल्य एवं आसान ऋण की उपलब्धता सरकार को सु. निश्चित करनी होगी तभी किसानों की स्थिति सुधरेगी और उन्हें आत्महत्या करने से रोका जा सकेगा।

किसानों की बेहतरी के लिए सरकारों ने अभी तक कई समितियां बनाईं। इन समितियों ने अच्छी सिफारिशें भी प्रस्तावित कीं, फिर भी किसानों की हालात में कोई सुधार नहीं आया है। जमीनी स्तर पर आज किसानों की हालत बेहद खराब है। उन्हें तमाम परेशानियों से जूझना पड़ रहा है। किसानों की खुदकुशी रोकने के लिये यदि सरकार वाकई संजीदा है, तो वह जल्द से जल्द एक ऐसी योजना बनाए जिसमें किसानों के हितों का खास खयाल रखा जाए। किसानों के सामने ऐसी नौबत ही न आए कि वे खुदकुशी की सोचें। आज देश में किसानों की बेहतरी के लिये उनके ऋण को माफ करने की बजाय ऐसी योजना बनाकर उनको राहत प्रदान की जाये जिससे उनको खेती के लिये ऋण लेने की जरूरत ही ना पड़े। किसानों को उनकी उपज की लागत का वास्तविक मूल्य मिलने लगे तो उनकी अधिकांश समस्यायें ही समाप्त की जा सकती हैं।

कमजोर कहानी को रणवीर की एक्टिंग और रोहित शेट्टी के निर्देशन ने बनाया सुपरहिट

रणवीर सिंह की मोस्ट अवेटिड फिल्म सिंबा ने बॉक्स ऑफिस पर दस्तक दे दी हैं और रिलीज होते ही इस फिल्म नें धमाल भी मचा दिया हैं। लंबे समय से फ्लॉप हो रहे रोहित शेट्टी ने फिल्म सिंबा के जरिये एक बार फिर से अपने आप को साबित कर दिया है की वो एक्शन और कॉमेडी फिल्मों के बाहुबली है। इस फिल्म में उनके जबरदस्त निर्देशन के चलते फिल्म बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही है। इस फिल्म में रणवीर सिंह, सारा अली खान, और सोनू सूद लीड रोल में नजर आ रहे हैं। आइये जानते है फिल्म की कहानी क्या हैं–

फिल्म की कहानी

फिल्म की शुरूआत होती है सिंबा (रणवीर सिंह) के बचपन से.. फिल्म में एक अनाथ लड़के की ख्वाहिश होती है कि वो बड़े होकर पुलिस ऑफिसर बनें और खूब पैसा कमाए.. और ये अनाथ लड़का बडा होकर पुलिस ऑफिसर सिंबा बनता है। सिंबा की कोशिश होती है कि वो हर तरह की बइमानी करके बहुत पैसा कमाए जिसके चलते वो अपनी पोस्टिंग गोवा के शहर में करवा लेता है जहां उनकी मुलाकात वहां के माफिया दूर्वा रानाडे (सोनू सूद) से होती है और फिर मिलते है दो बईमान यार.. दोनों एक दूसरे का साथ देकर शहर पर राज करते हैं। दूसरी तरफ सिंबा की लाइफ में शगुन (सारा अली खान) की एंट्री होती है। पहले बातें होती है फिर मुलाकातें होती हैं और फिर हो जाता हैं इन दोनों को एक दूसरे से प्यार... फिर फिल्म में आता है नया मोड़ .. सिंबा की जिंदगी बदल जाती है एक घटना सिंबा को बईमान से इमानदार बना देती हैं। वो क्या घटना है इसके लिए आपको फिल्म देखनी पड़ेगी.....

फिल्म में रणवीर सिंह के पुलिस लुक ने और एक्टिंग ने दर्शकों का दिल जीत लिया है। फिल्म में रणवीर सिंह की एंक्टिंग ने जान डाल दी है आप कह सकते है कि कमजोर कहानी को रणवीर सिंह ने जबरदस्त बना दिया हैं। पुलिस की वर्दी में वह एक दम जच रहे है। रणवीर ने एक पुलिस ऑफिसर के हाव–भाव, स्टाइल सभी चीजो को बेहद बारीकी से परखा है और उनकी यहीं परख इस फिल्म को कामयाब बनाती है। सोनू सूद फिल्मों में एक विलेन के रुप में ही देखे जाते है, इसी के चलते इस फिल्म में भी वह अपने किरदार के साथ पूरी तरीके से न्याय करते हुए नजर आ रहे है। वहीं फिल्म केदारनाथ से अपनी पहचान बनाने वाली सारा अली खान ने दोबारा अपनी एक्टिंग का लोहा मनवा लिया है। इस फिल्म के जरिये बॉलीवुड को एक नई जोड़ी देखने को मिली है। इस फिल्म में रणवीर और सारा की कैमेस्ट्री बेहद ही गजब लग रही हैं।

कमजोर कड़ी

फिल्म सिंबा में दर्शको को कोई नई कहानी देखने को नहीं मिली। दर्शक ऐसी कहानियों से पहले से ही रुबरु है। लेकिन फिर भी रोहित शेट्टी ने अपने निर्देशन के चलते इस फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर कामयाब बनाया है।

म्यूजिक

आंख मारे , तेरे बिन नहीं लगदा और आला रे आला तीनो गाने बेहतरीन है। सोशल मीडिया पर इन गानों ने रिलीज होते ही तहलका मचा दिया था। बात कि जाए फिल्म के म्युजिक की तो बैकग्राउंड म्युजिक काफी दमदार है हर बीट एक्शन से मेल हो रही है और सुनने में भी काफी मजेदार हैं।

ACN GROUP OF INSTITUTIONS

A Challenge For Most Rewarding Career

(Approved By A.I.C.T.E New Delhi & Affiliated to U.P.T.U. & B.T.E., Lucknow)

ACN INTERNATIONAL SCHOOL

Developing Global Leaders

Facilities | Day Boarding School | Hostel for Girls & Boys | Transport Facilities | Horse Riding | Gymnasium | Summer Camp

ADMISSION OPEN

Nursery to Class X

Call: 9634296781

BTCमें सीधे प्रवेश

BTC in Minority Quota

Qualification : Graduate (50%)

अलीगढ़ का प्रथम अल्पसंख्यक बी. टी. सी. संस्थान

8439750205, 9412735085

B. Tech.

College Code - 339

Civil, ME, EC, EE, Cs, IT, AG

MD

UNANI(2017-18)

- Moalijat (Medicine) - (4)
- Kulliyat (Physiology) - (9)
- Tahaffuzi wa Samaji Tib (Social & Preventive Medicine/Hy

BAMS | BUMS

Call: 9412735085

MBA

HRM, MM, FM, IBM, IT

DEGREE :

B.Sc. Nursin (4 Years Course)

Post Basic B.Sc. Nurs (2 Years Course)

PGDM

HRM, MM, FM, IBM,

DIPLOMA :

GNM (3 Years Course

ANM (2 Years Course

Call 9897763288

DIPLOMA POLYTECHNIC

B. T. E. Code - 608

Civil, ME, EE, EC, Architec

DIPLOMA IN PHARMACY (AYURVEDIC)

Qualification : 12th (Science) Duration - 3 Years

DIPLOMA IN NURSING (AYURVEDIC)

Qualification : 12th Duration - 3 Years

B. Ed.

BBA

BCA

2 Years Course — PHYSIOTHERAPY

2 Years Course — OPTOMETRY

Homeopathic Pharmacy

(उत्तर प्रदेश होम्योपैथी बोर्ड, लखनऊ से मान्यता प्राप्त)

(2 Year Course)[12 with Maths + Bio (Any)]

सरकारी होम्योपैथी कॉलेज में नौकरी हेतु पद खाली

Head Office: Grand Plaza, Marris Road, Civil Lines, Aligarh Tel. 0571-3259119, Mob. 7055434208

Campus: ACN City, Qasimpur Power House Road, Aligarh Mob.: 09456618910, 09927882068, 09927319189

Visit us Online - www.acngi.edu.in, Engineering College-www.acncems.edu.in

ITM GROUP OF INSTITUTIONS

ADMISSION OPEN 2019-20

COURSES OFFERED

B.TECH • CIVIL • ME • EEE • CSE • IT • EC | **M.TECH** • ECE • CSE • ME | **MBA** • Fin. • HR • Mkt. • IB • IT | **DIPLOMA** • CIVIL • EEE • ME(Production) • ME(Automobile)

B.Ed | **D.El.Ed.(BTC)** | **D.Pharma** | **ITI**

CAMPUS PLANNED FOR 10000 STUDENTS | STUDENT SUPPORT SERVICES | EXCELLENT ACADEMIC INFRASTRUCTURE | WORLD-CLASS ELECTRONIC LIBRARY | EXCELLENT SPORTING INFRASTRUCTURE | SEPARATE HOSTELS FOR BOYS AND GIRLS | WI-FI CAMPUS

Khair Road, Karsua, Aligarh - 202440, (U.P.), INDIA, Phone : 0571-2213721,
Email : itmaligarh@gmail.com Website : www.itmaligarh.com

ADMISSION HELPLINE: 09927033475, 09927635500